36

वर्ष 40, अंक 09, मार्च 2005, मूल्य 5.00

# ज्ञानामृत मासिक






**1. पानीपत**- विश्व शान्ति महासम्मेलन के उद्घाटन अवसर पर उपस्थित हैं स्वामी सर्वानन्द सरस्वती जी, राजयोगिनी दादी जानकी जी, राजयोगिनी दादी मनोहर इन्द्रा जी तथा ब्र.कु. मोहन सिंघल भाई। **2. देहली (यमुना पार)**- शिव जयन्ती शान्ति उत्सव का उद्घाटन करते हुए देहली की मुख्यमन्त्री बहन शीला दीक्षित, राजयोगिनी दादी जानकी जी, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, राजयोगिनी दादी कमलमणि जी तथा अन्य।

























1. **रायपुर-** छत्तीसगढ़ के राज्यपाल महामहिम भ्राता के.एम. सेठ जी तथा प्रथम महिला बहन वीणा सेठ जी से स्नेह-भेंट करते हुए अमेरिका के इन्जीनियर ब्र.कु. रामप्रकाश भाई, ब्र.कु. कमला बहन तथा ब्र.कु. सविता बहन। 2. **पोर्ट ब्लेयर-** अण्डमान एवं निकोबार द्वीप समूह के नायब राज्यपाल महामहिम प्रो. भ्राता श्रीराम कैप्से को ईश्वरीय साहित्य प्रदान करती हुई ब्र.कु. त्रिवेणी बहन। 3. **अम्बाजी-** गुजरात के राज्यपाल महामहिम भ्राता नवलकिशोर शर्मा से स्नेह मुलाकात के बाद ब्र.कु. डॉ. ममता बहन तथा अन्य। 4. **मनाली-** हि.प्र. के मुख्यमन्त्री भ्राता वीरभद्र सिंह को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. सन्ध्या बहन। 5. **भुबनेश्वर-** उड़ीसा के मुख्यमन्त्री भ्राता नवीन पटनायक से ज्ञान-चर्चा के बाद ब्र.कु. संगीता, मन्जू बहन, विजय भाई तथा अन्य। 6. **रीवा-** सुख, शान्ति एवं सहयोग महोत्सव का उद्घाटन करते हुए सांसद भ्राता चन्द्रमणि त्रिपाठी जी, राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी, ब्र.कु. महेन्द्र भाई, ब्र.कु. निर्मला बहन तथा अन्य। 7. **किशनपुरा (पंजाब)-** केन्द्रीय मन्त्री भ्राता स. बलवंत सिंह रामूवालिया को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. अमरज्योति बहन। 8. **मुम्बई (गामदेवी)-** ब्र.कु. रमेश शाह को अन्तर्राष्ट्रीय वित्त प्रबन्धन एवं ज्ञान के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ तथा गैर सरकारी सहयोगी संस्थाओं द्वारा प्रदान किए गए अवॉर्ड के उपलक्ष्य में आयोजित बधाई समारोह का उद्घाटन करते हुए भारतीय व्यापारी चेंबर्स के अध्यक्ष भ्राता नानिक रूपानी, पूर्व केन्द्रीय मन्त्री जयवंती बेन मेहता, सिंघानिया इण्डस्ट्रिज के अध्यक्ष भ्राता सिंघानिया जी, ब्र.कु. सन्तोष बहन तथा ब्र.कु. ऊषा बहन।

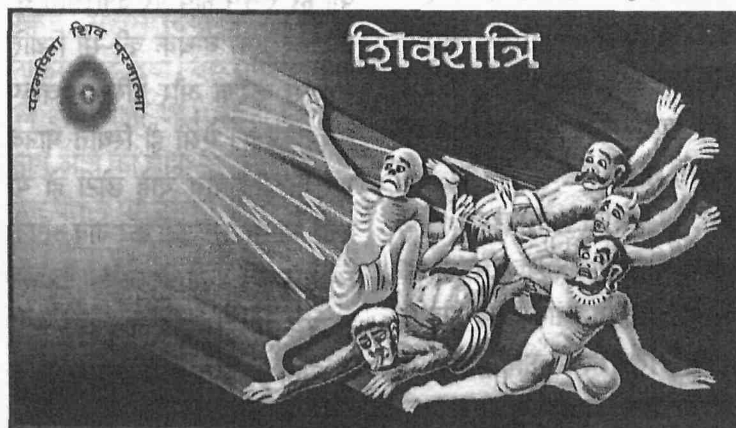
– संजय की कलम से

# शिवरात्रि ही हीरे-तुल्य जयंती है

संसार में जिस किसी भी व्यक्ति का जन्म-दिन लोग मनाते हैं, उसकी जीवन कहानी के बारे में वे थोड़ा-बहुत तो जानते ही हैं। उदाहरण के तौर पर विवेकानन्द या महात्मा बुद्ध की जयंती मनाने वाले लोग भी उनके जीवन-वृत्त को जानते हैं और उनके जन्मोत्सव के दिन उसका विशेष वर्णन करके वे उन महात्माओं के जीवन से गुण ग्रहण करने की चेष्टा भी करते हैं। परन्तु शिवरात्रि के अवसर पर जो लोग केवल जागरण, उपवास तथा शिव की पूजा कर डालते हैं, वे शिव के अलौकिक जन्म और कर्त्तव्यों से यथार्थ रीति परिचित नहीं हैं, नहीं तो यदि वे संकटमोचन शिव को जानते तो आज सब संकट दूर हुए होते।

एक और विचारणीय बात यह है कि शिव के जन्म-काल को 'शिवरात्रि' नाम से लोग मानते हैं। भला 'रात्रि' शब्द पर क्यों जोर दिया गया है? यदि अन्य किसी महान् व्यक्ति का जन्म, रात्रिकाल में हुआ भी हो और उसका जन्मोत्सव मनाया भी जाता हो, तो भी उसके जन्मोत्सव का नाम 'शिवरात्रि' की भाँति 'रात्रि' शब्द को नहीं लिए रहता। अत: यह भी जानने योग्य रहस्य है कि शिव के प्रसंग में 'रात्रि' शब्द का क्या विशेष भाव और महत्त्व है और रात्रि शब्द पर क्यों ज़ोर दिया गया है? जबकि शिव-प्रतिमा से विदित होता है कि शिव का कोई शारीरिक रूप नहीं है तो शिव के लिए दिन और रात का क्या भेद? पुनश्च, अन्य महान व्यक्तियों के बारे में तो लोग यह भी जानते हैं कि उन्होंने शरीर कब और किन परिस्थितियों में या किस आयु में छोड़ा परन्तु शिव को लोग 'अमरनाथ', 'अजन्मा', तथा 'मृत्युञ्जय' मानते हुए भी उसका जन्मोत्सव मनाते हैं। भला यह कैसे? जो अजन्मा और अमर है, उसका जन्मोत्सव कैसे?

शेष पृष्ठ 27 पर




## अमृत-सूची


- बातों का बोझ (सम्पादकीय) ................ 2
- पवित्रता का सुख ............ 4
- चेतावनी हैं प्राकृति आपदाएँ ... 5
- भोजन – याद में या स्वाद में .. 6
- होली प्रभु-प्रेम के रंग की ..... 7
- 'पत्र' सम्पादक के नाम ........ 9
- गृहस्थ में ब्रह्मचर्य – समय की माँग ............... 10
- आज्ञा-भंग की सजा .......... 12
- जीत है वहाँ, प्रभु-प्रीत है जहाँ 13
- गिरा दो दीवारें – मिटा दो लकीरें (कविता) ..... 15
- बचाइये, कन्या-भ्रूण को काल के गाल से .............. 16
- आत्मिक खुशियाँ लेकर आई होली (कविता) .......... 19
- प्रभु मिलन का प्रण पूरा हुआ .. 20
- पुरुषोत्तम संगमयुग और अवतारवाद................. 23
- सुनामी अथवा कुनामी ........ 26
- सचित्र सेवा समाचार .......... 29



## सदस्यता शुल्क

| भारत | वार्षिक | आजीवन |
|---|---|---|
| ज्ञानामृत | 60/- | 1,000/- |
| वर्ल्ड रिन्युअल | 60/- | 1,000/- |
| **विदेश** | | |
| ज्ञानामृत | 550/- | 6,000/- |
| वर्ल्ड रिन्युअल | 550/- | 6,000/- |

शुल्क केवल 'ज्ञानामृत' अथवा 'द वर्ल्ड रिन्युअल' के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है–सम्पादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन – 307510 (आबू रोड) राजस्थान।

– शुल्क के लिए सम्पर्क करें–

09414423949, 09414154383



सम्पादकीय .......

# बातों का बोझ

विज्ञान ने मानव जीवन के सभी पहलुओं में भारी परिवर्तन लाया है। वर्षों पहले उसकी जीवन-पद्धति में और आज की पद्धति में रात-दिन का अन्तर है। पहले उसे हर कार्य हाथ से करना पड़ता था, सभी प्रकार के सामान को, बोझ को हाथों में लटका कर, पीठ या सिर पर रख कर एक स्थान से दूसरे स्थान तक ढोना पड़ता था। परन्तु जबसे विज्ञान की जादुई छड़ी उसके हाथ लगी है वह सभी प्रकार के शारीरिक श्रम से छूट गया है। अब सिर और पीठ पर बोझ उठाने के दिन लद चुके हैं। जब से पहिये का प्रयोग हुआ है तब से उसने हर चीज़ के साथ पहिए जोड़ कर उन्हें सरपट दौड़ने के काबिल बना लिया है। उदाहरण के लिए अब तो उसके जूतों में पहिए, सफर के बैग में पहिये और रसोई में रखे जाने वाले स्टैण्ड में भी पहिए हैं। पहियों के बने यन्त्रों के बल पर वह ज़मीन पर फिसलने का, पानी में हिलोरें लेने का और हवा में झूला झूलने का आनन्द उठा रहा है। भारी से भारी चीज भी पलक झपकते इधर से उधर पहुँचा दी जाती है। परन्तु इतना कुछ पा लेने पर भी, इजाद कर लेने पर भी, साधनों की सुखदाई गोद में बैठने पर भी क्या मानव सचमुच हल्का है? क्या उसका चित्त प्रसन्न है, क्या तन भी भारहीन होकर प्रसन्नता भरी कलाबाजियों में मशगूल है, क्या उसे अन्तर्जगत की भारहीनता, निश्चिन्तता, सन्तुष्टता और प्रफुल्लता प्राप्त है? अवश्य ही उत्तर होगा, नहीं। क्योंकि भौतिक सुख-सुविधाओं ने भौतिक वस्तुओं के भार को भले ही हल्का कर दिया है परन्तु अभौतिक सत्ता मन अधिक दबाव और बोझ महसूस कर रहा है। यह सत्य है कि आज मानव के हाथों में, पीठ पर और सिर पर बोझ नहीं है परन्तु मन अदृश्य बोझों के असीम-दबाव में है। सोते-जागते, चलते-फिरते, उठते-बैठते, कार्य व्यवहार निभाते अर्थात् हर पल-क्षण उसका मन भारी और बोझिल है। इस अदृश्य बोझ को वह न चाहते हुए भी ढोने को मजबूर है, कैसी विडम्बना है!

साधनों और सुविधाओं के इस युग में शारीरिक श्रम करना, यहाँ तक कि अपनी आवश्यक चीजें उठाना भी शर्म की बात बनती जा रही है। व्यक्ति आवश्यक सामान उठाने के लिए किसी साथी, सहयोगी या सेवक का मुख ताकता है परन्तु अनावश्यक बोझों को अकेला ही मन रूपी पीठ पर रख कर ढो रहा है। इस अनावश्यक वजन को बाँट लेने वाला कोई योग्य साथी उसे दिखाई भी नहीं दे रहा है। महँगी रकम खर्च करने पर भी नहीं मिल पा रहा है। आज व्यक्ति का कड़वा अनुभव तो यही है कि जिस पर भी मन को हल्का करने की आस रखी उसने उसके बोझों को, चिन्ताओं को, आकुलता को, दबाव को बढ़ा तो दिया पर कम नहीं किया।

**क्यों है मन बोझिल?**

मान लीजिए एक वस्तु में 15 ग्राम वजन है। उसे उठाने में कोई तकलीफ महसूस नहीं होगी। परन्तु यदि व्यक्ति इसी 15 ग्राम वजन को मुट्ठी में पकड़े-पकड़े या हथेली पर रखे-रखे कार्य करने के लिए मजबूर हो तो उसका हाल क्या होगा? वह 15 ग्राम वजन उसके लिए विशाल चट्टान से भी अधिक भारी बन जाएगा। वह 15 ग्राम की उस वस्तु की हर समय हाथ पर उपस्थिति से, निरन्तर एक बन्धक की-सी स्थिति महसूस करेगा और परिणामस्वरूप बेचैन रहेगा। ऐसी ही स्थिति मानव मन की है। बात चाहे छोटी हो या बड़ी, मानव उसे उठा कर जब अपनी स्मृति रूपी हथेली पर अथवा मन की अदृश्य मुट्ठी में पकड़ लेता है तो भारी हो जाता है। बात छोटी होती है परन्तु

हर समय उसे स्मृति में उठाए रखने से वह छोटी बात वजनी बन जाती है। व्यक्ति की मानसिक स्थिति बेचैन होकर भटकने का, चैन न पाने का अहसास करती है। **मन और बुद्धि में लम्बे समय तक रखी गई कोई भी व्यर्थ या विकारी बात, चिन्तन के केन्द्र को इस प्रकार घेर लेती है कि कोई अन्य अच्छी या कल्याणकारी बात वहाँ ठहर नहीं सकती है। साफ वस्तु हल्की होती है परन्तु मैल होने से उसका भार बढ़ जाता है। मानव मन निर्मल बातों से भरा हो तो फरिश्ते की तरह उड़ने का अनुभव करता है और गन्दी बातों से भरा हो तो कीचड़ में फँसने जैसा अनुभव करता है।** कई बार अच्छी बात को भी ग़लत दृष्टिकोण से देखा जाता है तो मन में गाँठ पड़ जाती है।

एक गुरु अपने चेले के साथ नदी पार कर रहा था। नदी में डूबती हुई एक युवती पर उसकी नजर पड़ी। दयार्द्र होकर उसने युवती का हाथ पकड़, सहारा दिया और किनारे लाकर छोड़ दिया। वह अपने गन्तव्य की और चली गई। गुरुजी चेले के साथ आगे की यात्रा पर चल पड़े। दो दिन बीतने पर उनका पड़ाव आया। दोनों बैठ गए परन्तु गुरुजी ने देखा कि चेले के चेहरे पर संशय, घृणा, दुर्भावना तथा नकारात्मक सोच की अमंगलकारी छाया थी। पूछने पर उसने पहले तो ना-नुकर की पर फिर बता ही दिया कि संन्यासी होने के नाते आपके लिए नारी को छूना भी वर्जित है पर आपने तो उसका हाथ पकड़ लिया। संन्यासी पहले तो मुस्कराए, फिर धीरे से कहा – "हाथ तो तूने पकड़ा है, मैंने तो डूबते को बचाने का, बेसहारा को सहारा देने का और प्राणीमात्र पर दया करने का एक संन्यासी का धर्म निभाया है। तेरे दृष्टिकोण ने दया भरे सहारे को, परोपकार को हाथ पकड़ने की अनुचित क्रिया समझा है और उसी बोझ को दो दिन से उठाने से तुम्हारा मन क्लान्त है।" यही है मन का भार। **देखी हुई, सुनी हुई, पढ़ी हुई व्यर्थ बात या घटना को जितने लम्बे समय तक मेहमान बना कर रखेंगे वह सुख-शान्ति को ग्रास बनाती रहेगी और जितना जल्दी उसे निकाल फेंकेंगे, हल्के हो जायेंगे।**

### बोझिल मन का प्रकटीकरण

आज के संसार में मानव आवेगों से घिरा रहता है। ये आवेग क्यों उत्पन्न होते हैं? ये आवेग बोझिल मन का प्रकटीकरण हैं। हम जानते हैं कि जब किसी व्यक्ति ने सामान्य वजन की कोई वस्तु उठाई हुई हो तो वह उसे प्यार से यथास्थान पर रख देता है अथवा उचित व्यक्ति को ससम्मान प्रदान कर देता है परन्तु असहनीय बोझ उठाया हुआ व्यक्ति उसे बुरी तरह पटकता है जिससे कई चीजों का नुकसान भी हो जाता है। विभिन्न आवेग जैसे कि उत्तेजना, क्रोध, नफरत आदि भी मन के असहनीय बोझ को बेरहमी से बाहर प्रकट करने के ही प्रतीक हैं। व्यक्ति जैसे-तैसे बोझ से छुटकारा पाना चाहता है, मन को हल्का करना चाहता है और इसी चाहत में वह व्यवहार की गरिमा को तथा सामने वाले व्यक्ति को होने वाले नुकसान को भी नजरअन्दाज कर देता है। इस सम्बन्ध में महात्मा बुद्ध के जीवन की एक घटना है –

महात्मा बुद्ध अपने पटु शिष्य आनन्द के साथ भ्रमण पर थे। क्रोध और घृणा के आवेग से ग्रस्त एक व्यक्ति दौड़ता हुआ आया और उसने बुद्ध के वक्ष पर थूक दिया। बुद्ध ने तुरन्त हाथ जोड़े और बोले – "कृपया और जो भी कहना हो कह डालें, मैं धैर्यपूर्वक सुनने को तत्पर हूँ।" परन्तु आनन्द को क्रोध आया। उसने कहा – "भन्ते, इसने कुछ कहा तो है ही नहीं, बल्कि उसने इतना भ्रष्ट आचरण किया है कि आप कहें तो इसे भारी दण्ड दूँ।" बुद्ध केवल मुस्कराए और शान्त भाव से आगे बढ़ गए। लेकिन अगले दिन सूर्य की पहली किरण फूटते ही वह व्यक्ति फिर बुद्ध के

सामने था और उनके चरणों पर सिर रख कर फूट-फूट कर रो रहा था। बुद्ध ने कहा – "आनन्द, देख, कल भी यह कुछ कह रहा था, आज भी कुछ कह रहा है। आवेग और भाव इतने प्रबल होते हैं कि उनको व्यक्त करने के लिए शब्द समर्थ नहीं होते। यह अपने भावों को आचरण से प्रकट कर रहा है। आनन्द, यह व्यक्ति निश्चित रूप से दया का पात्र है।"

आज जो गोलियाँ और बन्दूकें चल रही हैं, हिंसा और अन्याय का बाजार गर्मा रहा है, चोरी और छीना-झपटी बढ़ रही है यह सब भी मानव मन के नकारात्मक आवेगों का ही प्रकटीकरण है। मानव ही नहीं प्रकृति भी अपने आवेगों को बाढ़, भूकम्प, तूफान, अतिवृष्टि, अनावृष्टि आदि के रूप में प्रकट करती है। सुनामी लहरों का कहर भी मूक प्रकृति की आन्तरिक पीड़ा का प्रकटीकरण ही है। आज हम प्रकृति को धिक्कारते हुए कहते हैं कि जीवन देने वाले पानी ने ही कितनों का जीवन छीन लिया। परन्तु प्रकृति की चित्कारों को नहीं सुन रहे हैं। हमारे कर्मों ने उसे इतना अधिक दु:खी कर दिया है कि वह भी मानव को दु:खी करके अपने दु:ख को प्रकट रही है। अत: **प्रकृति धिक्कार की नहीं रहम की पात्र है जैसे बुद्ध ने उस व्यक्ति को धिक्कारा नहीं उस पर रहम किया। हमें भी प्रकृति के प्रति दया दिखा कर इसके** रौद्र रूप को सौम्य रूप में बदलना है। इसके लिए अपने स्वार्थ के लिए इसका शोषण करना छोड़ें, अपनी तमोगुणी इच्छाओं की पूर्ति के लिए इसको कुरूप करना छोड़ें। प्राकृतिक आपदाओं को बौद्धिक बल से कुचलने की ऊँची-ऊँची योजनाएँ बनाने के स्थान पर अपने नकारात्मक, हिंसक, अत्याचारी, अन्यायी, विलासिता भरे आवेगों को कुचलें तो प्रकृति भी नतमस्तक हो सुखदायी बन जाएगी। राजयोग के निरन्तर अभ्यास द्वारा व्यक्ति इन आवेगों को समाप्त भी कर सकता है और इनकी दिशा बदल कर इन्हें कल्याणोन्मुख भी कर सकता है अर्थात् हिंसा, चोरी, ठगी के स्थान पर उसका मन दातापन की भावना, रहम भावना, उद्धार करने की भावना तथा सबको शाश्वत रूप से सुखी करने की भावना से भर सकता है। अत: **समय की माँग है कि हम मन के बोझ से उत्पन्न आवेगों को समाप्त करें और ईश्वर पिता से योगयुक्त होकर, करुणा से आप्लावित होकर हर आँख से आँसू पोंछने में लग जाएँ।**

– **ब्रह्माकुमार आत्म प्रकाश**

## पवित्रता का सुख

पवित्रता का सुख सबसे श्रेष्ठ सुख है। इसी में ईश्वरीय स्मृति (परमात्मा की याद) की रसना में मन तल्लीन हो जाता है, याद की रसना में डूब जाता है। इस सुख को कई लोग समाधि कहतेहैं, कई ऐक्य अवस्था कहते हैं, कई लवलीन अवस्था कहते हैं, वही अतीन्द्रिय सुख है। यह सुख सिर्फ योगी को मिलता है। खाने-पीने से, देखने-करने से जो सुख मिलता है वो यह सुख नहीं, उस सुख को इन्द्रिय सुख कहते हैं। मन को डायरेक्ट परमात्मा से जोड़ने से जो सुख मिलता है उसको इन्द्रियातीत अथवा अतीन्द्रिय सुख कहते हैं। वो सुख केवल संगमयुग के थोड़े से समय में मिलता है। यह सुख अनमोल है, यह कल्प में एक ही बार प्राप्त होता है। जो चीज़ एक ही बार प्राप्त होती है उसका मूल्य और महत्त्व बहुत होता है। यह सुख तब मिल सकता है जब आप परमात्मा के समान बनें। परमात्मा के समान बनने का मतलब है पवित्र बनना और योगी बनना। जीवन में निर्मलता को लाने से और ईश्वरीय स्मृति अथवा शिव बाबा की याद में निरन्तर रहने से यह अतीन्द्रिय सुख प्राप्त होता है। ■ ■

# चेतावनी हैं प्राकृतिक आपदाएँ

– ब्रह्माकुमार विशाल जैन, अकोला

मनुष्य पर इतने संकट क्यों आते हैं, धरती माँ तथा ईश्वर पिता हमें क्षमा क्यों नहीं करते, उन्हें हम पर दया क्यों नहीं आती ? ईश्वर तो दरियादिल हैं, दया के सागर हैं ...... आदि-आदि बातें और प्रश्न पिछले दिनों जो प्राकृतिक आपदा आई उसे लेकर अनेकों के मुख से सुनने को और समाचार-पत्रों में पढ़ने को मिल रहे हैं। मैं अपने अनुभवों के द्वारा आपको बताना चाहता हूँ कि मनुष्य पर जो भी संकट और समस्याएँ आती हैं ये सब प्रकृति के साथ उसकी छेड़छाड़ के परिणाम हैं। मनुष्य स्वार्थी है, जहाँ उसका वश नहीं चलता, वहाँ वह भगवान पर दोषारोपण करने लगता है। परन्तु अपने कर्मों के हिसाब-किताब का दोषारोपण भगवान पर लगायेंगे (कि सुख भी देता, दुःख भी तू देता) तो पापों का बोझ बढ़ता ही जाएगा। अपनी गलती के लिए निर्दोष पर दोष लगाना गलत है, पाप है। भगवान भी निर्दोष हैं।

**धरती सबकी माता है**

धरती माता केवल मनुष्यों की माता नहीं है, वह तो पेड़, पौधे, पशु, पक्षी .... आदि सबकी माता है। केवल मनुष्य मनमौजी होकर कुछ भी करता रहे, यह सहन नहीं किया जाएगा। मनुष्य ने अपने सुख के लिए, जिह्वा के स्वाद के लिए, घरों के निर्माण और सजावट के लिए, सौंदर्य प्रसाधनों के लिए पशु, पक्षी, पेड़, पौधों के जीवन को तहस-नहस कर दिया है। पेड़-पौधों पर जहरीले रसायन छिड़क-छिड़क कर उनकी नैसर्गिक क्षमता ही छीन ली है। कितनी बड़ी मात्रा में पशु-पक्षियों की हत्याएँ की हैं। नदियों में जहरीले रसायन छोड़ कर उनमें रहने वाले जानवरों का जीवन खतरे में डाल दिया है। बंजर धरती और गंदगी का यह आलम है कि जानवरों को खाने के लिए चारा नहीं है। आखिर उनका भी तो जीवन है। क्या कोई माँ अपने एक बच्चे को सुख देने के लिए दूसरे की हत्या करेगी ? जानवरों की हत्या करते समय उनके जिगर से निकली कराह, आह और बद्दुआओं से तो धरती माँ का कलेजा भी फटता होगा।

इसके अलावा मनुष्य, मनुष्य के प्रति भी वफादार कहाँ है ? निरपराध लोगों का हर दिन बहता खून, बेघर लोग, महँगाई से टूटती कमर, वातावरण में प्रदूषण, बेरोजगारी से पीड़ित लोगों की आह और कराह, नारी जाति और मासूम बच्चों पर अत्याचार ..... कितना और सहन करेगी धरती माता ? यह धरती सबके लिए है अर्थात् यहाँ सबको सुख से जीने का अधिकार है, यह बात मनुष्य जब तक नहीं समझेगा, ऐसी भयावह आपदाओं का सामना उसे बार-बार करना पड़ेगा। कहते हैं कि ईश्वर दया का सागर है, वह हमें माफ क्यों नहीं करता ? **वास्तव में माफ तब किया जाता है जब आगे से पाप कर्म न करने की प्रतिज्ञा की जाए। आप भी अपने बच्चे को तब माफ करते हैं जब वह कहता है कि पिताजी, मैं आगे ऐसी भूल नहीं करूँगा। यहाँ मनुष्य तो चार दिन बाद पुनः अपने पाप कार्यों में लग कर ईश्वर से किए वायदे को रफा-दफा करने की कोशिश करता है। वैज्ञानिकों द्वारा दिखाए गए दिवास्वप्नों, ख्याली पुलावों और हवाई किलों में स्वयं को सुरक्षित मानने लगता है और फिर से जब आपदा आती है तो भगवान पर दोष मढ़ देता है। हाय री मनुष्य की बुद्धि !**

**अब पापों से तौबा करो**

लेकिन अभी तो यह कृपा ही है कि कहीं आपदा होती है तो अन्य सुरक्षित लोग आपदाग्रस्तों को मदद कर देते हैं जिससे कुछ दिनों में पुनः जन-जीवन सामान्य हो जाता है। लेकिन मनुष्य के लिए यह चेतावनी (warning) भी है कि हे मानव, समझ लो कि अब पापों से तौबा करनी

ही है। नहीं तो हाल उस मनुष्य जैसा होगा जिसने देह त्यागने के बाद परमात्मा से शिकायत की कि आपने बिना सूचना दिए अचानक मुझे क्यों बुला लिया। भगवान ने कहा – "वत्स, मैंने एक नहीं कई सूचनाएँ भेजी पर तुमने ध्यान ही नहीं दिया। पहले तुम्हारे बाल सफेद हुए, फिर दाँत गिरे, फिर दिखना बन्द हुआ, फिर कानों ने काम करना छोड़ दिया .... ये सब सूचनाएँ ही तो हैं पर तुम अमर होने की आस लगाए रहे और पुण्यों से दूर भागते रहे।" यही हाल इस सृष्टि का भी है। अन्तिम महापरिवर्तन से पहले, ये छोटे-छोटे झटके हमें चेतावनी दे रहे हैं कि अब सृष्टि बदलने वाली है। सृष्टि के महापरिवर्तन से पहले अपना महापरिवर्तन कर लो। भगवानुवाच है कि **हे मेरे आत्मा रूपी बच्चो, इस सृष्टि पर मुझे अब स्वर्ग की स्थापना करनी है। अत: यह विनाश भी कल्याणकारी है। मैं तो आपके शरीर से नहीं आत्मा से प्यार करता हूँ अत: आप भी स्वयं को आत्मा निश्चय करो और अन्य को भी आत्मा रूप में देखो तथा मुझसे नाता जोड़ो, पवित्र बनो और योगी बनो। मेरी श्रीमत पर चलने वालों की हर प्रकार की सुरक्षा का वायदा मैं अवश्य निभाऊँगा।**

* * *

# भोजन – याद में या स्वाद में

– ब्रह्माकुमारी विद्या, सुमेरपुर

कहा जाता है कि 'जैसा खाओ अन्न, वैसा हो जाए मन।' यदि मनुष्य का आहार शुद्ध न हो तो परमात्मा की स्मृति का अभ्यास ठीक रीति से हो नहीं सकता है। एक संत ने लिखा है – एक दिन मैंने पीछे मुड़ कर देखा तो एक व्यक्ति छाया की तरह मेरे साथ-साथ चल रहा था। मैंने पूछा – "तुम कौन हो और क्यों मेरे पीछे चल रहे हो?" वह बोला – "हुजूर, मैं शैतान हूँ, आपके पीछे हर क्षण इसलिए रहता हूँ कि कब आप गफलत में आएँ और मैं आपके अन्दर चला जाऊँ।" मैं बोला – "भाई, मैं हर क्षण सावधान रहता हूँ, मैं सोते-जागते पूरा ख्याल रखता हूँ कि तुम मेरे अन्दर न आ पाओ। हर बात में ईश्वर को याद रखता हूँ, फिर तुम कैसे मेरे अन्दर आने का अवसर पाओगे?" वह बोला – "हाँ, हुजूर, आप सावधान तो बहुत रहते हैं, फिर भी एक मौका ढूँढ़ रहा हूँ, शायद मिल जाए, वह मौका है भोजन के समय का क्योंकि आदमी भोजन करते समय जब भोजन का स्वाद लेता है तो ईश्वर को भूल जाता है, मैं उसी अवसर को देख रहा हूँ कि कब ऐसा हो और मैं अपना काम कर पाऊँ।" संत के इस कथन में कितनी गहन सत्यता छिपी है। **आसक्ति और स्वाद के वश होकर भोजन करना, दूसरे के हिस्से का भी ख्याल न करके, आवश्यकता से अधिक भोजन करना, असमय भोजन करना, बार-बार भोजन करना, अशुद्ध तामसिक भोजन करना, बिना मेहनत किए माँग कर भोजन करना, ये सब वो बुराइयाँ हैं जो शैतान के आत्मा में प्रवेश होने का द्वार खोल देती हैं। अत: भोजन बड़ी पवित्रता से किया जाना चाहिए। भोजन बनाने वाला पवित्र हो तथा भोजन करने का स्थान भी स्वच्छ हो। भोजन को पहले प्रभु को अर्पण करें। ऐसा भोजन शरीर को पुष्ट करता है। रोगों को दूर रखता है और मनोविकारों से बचाता है।**

हम अन्न की पौष्टिकता के बारे में जागरुक रहते हैं और अनेक संबन्धित जानकारियाँ भी रखते हैं। पौष्टिकता का ज्ञान जितना ज़रूरी है, सात्विकता का ज्ञान उससे भी अधिक जरूरी है। सम्पूर्ण भोजन वही होता है जो तन, मन, बुद्धि तथा आत्मा सभी को शक्तिशाली बनाए और मानव को प्रभु के नजदीक ले जाए इसलिए भोजन-पान भी भजन के समान ही पवित्र होना चाहिए।

# होली प्रभु-प्रेम के रंग की

– ब्रह्माकुमार डॉ. बलदेव, लुधियाना

तकरीबन सभी भारतीय त्योहार आध्यात्मिकता से सम्बन्धित हैं और आध्यात्मिकता के सभी विषय सूक्ष्म हैं। उन सूक्ष्म विषयों को दर्शाने के लिए स्थूल पदार्थों का सहारा लिया गया है। परन्तु आज के समय में सूक्ष्म आध्यात्मिक पहलू भुला दिए जाने के कारण सभी त्योहारों का रूप भौतिक ही बन गया है। आध्यात्मिकता को तिलांजलि देकर त्योहारों को विशुद्ध भौतिक रूप से मनाना शुरू कर दिया गया है।



**भक्ति की क्रियाओं के आध्यात्मिक अर्थ**

उदाहरण के तौर पर आध्यात्मिक ज्ञान को दर्शाने के लिए पानी शब्द का सहारा लिया गया है। हम पतित से पावन तो ज्ञान से ही बन सकते हैं परन्तु कालान्तर में ज्ञान-स्नान को भुला कर जल-स्नान को पावन करने वाला मान लिया गया और नदियों, तालाबों आदि में स्नान करना शुरू कर दिया गया। लेकिन ज्ञान के स्थान पर पानी का प्रयोग होने से अनर्थ हुआ है। हम सभी जानते हैं कि परमात्मा ज्ञान के सागर हैं, पतित पावन हैं लेकिन ज्ञान-सागर के बजाए यदि हम उन्हें पानी का सागर कहें तो क्या गति होगी ? कहाँ जड़ पानी और कहाँ परम चेतन परमात्मा की परम बुद्धि से विनिसृत होने वाला ज्ञान ! दोनों में कहीं भी साम्य नहीं हो सकता। इसी प्रकार, आत्मा एक ज्योति है जो सूक्ष्म है और पाँच तत्वों की नहीं बनी है। इसको दर्शाने के लिए दीपक का सहारा लिया गया है। पूजा के समय दीपक जलाना, व्यक्ति को मरते समय दीपक दिखाना या दीवाली पर दीपक जलाना, ये सब आत्मा की ही यादगारें हैं। पूजा आत्मा की होती है न कि शरीर की। हर देवी-देवता जिनकी हम पूजा करते आ रहे हैं, शरीर से भिन्न आत्मा ही हैं। उस पावन और प्रकाशमान आत्मा की स्मृति में ही दीपक जलाते हैं। मरते समय व्यक्ति को दीपक दिखाने का भी यही रहस्य है कि उसे यह स्मृति रहे कि वह शरीर नहीं बल्कि आत्मा है। आत्मा की ज्योति जलने से ही अन्तर का अन्धकार दूर होता है और तभी सच्ची दीवाली होती है। इसी प्रकार, पाँच विकारों को विष अर्थात् ज़हर के रूप में दर्शाया गया है। मन्दिर शब्द का वास्तविक अर्थ हमारे मन मन्दिर से है (मन + दर) अर्थात् मन में प्रभु को स्थान देना है। परन्तु इस वास्तविकता को दरकिनार कर अब तो स्थूल ईंटों का मन्दिर बना कर, उसमें किसी देवता आदि की मूर्ति स्थापन करके पूजा की जाती है।

भक्त लोग महामाई शक्ति का आह्वान करने के लिए सारी रात जागते हैं और भेंटें गाते हैं। वास्तव में तो अज्ञान को ही नींद कहा गया है। हम आत्माएँ अज्ञानता की नींद में सोई हुई हैं और आत्मा के अन्दर जो ईश्वरीय शक्तियाँ छुपी हुई हैं वे शिव

की शक्तियाँ हैं। अत: स्वयं को अज्ञान की नींद से जगाना और आत्मा में छिपी हुई गुप्त शक्तियों को प्रकट करना ही वास्तविक जागरण है। जब आत्मा अज्ञान निद्रा से जाग जाएगी तो सुषुप्त आत्मिक शक्तियाँ भी स्वत: ही जागृत हो जाएँगी। जिन आत्माओं के अन्दर काम, क्रोधादि विकार तथा ईर्ष्या, द्वेष, वैरभाव आदि अवगुण हैं उन्हें ही राक्षसों की संज्ञा दी गई है तथा उनकी डरावनी शक्ल बना कर सिर पर सींग तथा हाथों में नाखून आदि दिखा दिए गए हैं ताकि लोग उनकी सूरत से नफ़रत करके वैसे कर्मों से भी नफ़रत करें।

**ईश्वरीय रंग पक्का हो, कच्चा नहीं**

इसी प्रकार, होली भी रंगों का त्योहार माना गया है। रंग किस अर्थ का सूचक है? यहाँ रंग शब्द का भावार्थ कोई हरा, पीला, लाल, गुलाबी आदि रंगों से नहीं है बल्कि रंग अर्थात् प्रभाव या नशा, जैसे कि कहा जाता है "जैसा संग वैसा रंग" अर्थात् जिस प्रकार का हमारा संग होगा उसी प्रकार का हमारे पर प्रभाव पड़ेगा। हमारी मनोवृत्तियाँ, हमारे कर्म तथा हमारा स्वभाव उसी अनुसार ही होंगे। आज हर मनुष्य किसी-न-किसी रंग में रंगा है। वह प्राय: धन के रंग में अर्थात् लोभ के रंग में है, मान-शान के रंग में, अहंकार तथा फैशन के रंग में और काम आदि आसुरी वृत्तियों के रंगों में रंगा है। उसके जीवन में इन्हीं का प्रभाव व नशा है। परन्तु वह प्रभु-प्रेम के नशे से बहुत दूर है। प्रभु-प्रेम का रंग व नशा तभी चढ़ सकता है जब बाकी रंग उतरें। सूरदास जी ने भी कहा है "सूरदास खल कारी कामरी चढ़त न दूजो रंग" अर्थात् मन रूपी कामरी पर जब तक विकारों का काला रंग चढ़ा हुआ है तो प्रभु का उजला रंग कैसे चढ़ सकता है? तो होली कोई स्थूल रंगों का त्योहार नहीं है बल्कि प्रभु के प्रेम में रंगे जाने का त्योहार है। जब हम ईश्वरीय नशा नहीं चढ़ा सके और प्रभु-प्रेम के रंग में नहीं रंग सके तो हमने स्थूल रंगों की होली खेलनी शुरू कर दी। जब हम खुद को तथा दूसरों को भी प्रभु-प्रेम का रंग चढ़ाएँ तभी सच्ची होली होगी। इसके लिए रूहानी ज्ञान रूपी जल लेकर उसमें सहज योग रूपी रंग घोल कर, उसे आत्मिक स्नेह की पिचकारी में भर कर स्वयं पर भी डालें तथा अन्य पर भी डालें।

रंग दो प्रकार के होते हैं कच्चे और पक्के। कई रंग ऐसे होते हैं जो आज चढ़ाए जाते हैं और अगले ही दिन धूप में उड़ जाते हैं। परन्तु कई रंग पक्के होते हैं जो वर्षों तक बने रहते हैं। प्यारे शिव बाबा के प्रेम का रंग भी पक्का होना चाहिए, माया रूपी धूप में उड़ना नहीं चाहिए। कई बार रंग पूरा नहीं उड़ता पर फीका पड़ कर बदरंग हो जाता है। माया के वशीभूत होने वाली आत्मा का जीवन भी बदरंग हो जाता है। अत: हमें पक्का रंग लगाना है, परिस्थितियाँ आने पर भी रूहानी रंग को फीका नहीं होने देना है, तभी कहेंगे सच्ची होली मुबारक!

कहा जाता है कि होली खेलने से सभी के आपसी वैर-विरोध मिट जाते हैं। वास्तव में परमात्मा से योग लगाने से हमारी आत्मा पवित्र बन जाती है। उसके सारे दुर्गुण (ईर्ष्या, द्वेष और विरोधादि) दूर हो जाते हैं। मन में प्रेम जाग जाता है, विचार, कर्म, स्वभाव आदि सब शुद्ध हो जाते हैं। स्थूल रंग डालने से तो और ही कई बार झगड़े खड़े हो जाते हैं। कपड़े भी खराब होते हैं तथा वैर-विरोध मिटने के बजाए बढ़ने का डर रहता है। तो आइए, हम सभी ज्ञान और योग के अभ्यास द्वारा प्रभु-प्रेम के रंग में रंग कर सच्चा नारायणी नशा चढ़ाएँ तथा औरों को भी इसी रंग में रंग कर सच्ची-सच्ची होली मनाएँ।

❑❑❑

**पवित्र संकल्प बुद्धि का भोजन है, पवित्रता को अपना लो तो शक्तिशाली बन जायेंगे।**

# 'पत्र' सम्पादक के नाम





प्रश्न - विनाश कब और कैसे होगा, उस समय के लिए हम मनोबल कैसे बढ़ाएँ ?

– ब्रह्माकुमारी श्रद्धा, सतनाली (हरि.)

● ● ● ● ● ● ● ● ● ● ●

उत्तर - विनाश वास्तव में सृष्टि के महापरिवर्तन का नाम है। यह महापरिवर्तन किसी निश्चित घड़ी या मुहूर्त में घटे, ऐसा न परमात्मा ने घोषित किया है न किसी अन्य प्रमाण से सिद्ध होता है। हाँ, परिवर्तन की प्रक्रिया जारी है। जितनी तीव्र गति से मानवात्माओं में नैतिकता का स्तर गिर रहा है, महापरिवर्तन की अन्तिम भयावह घड़ी भी उतनी ही तीव्रता से सामने आती जा रही है। चिन्तकों का कहना है कि ज्ञान, गुण, शक्ति, धर्म, धारणा, पवित्रता, सदाचार, सद्भावना से रहित मानव, जीवित होते हुए भी मृत के समान है। इस परिप्रेक्ष्य में विश्व की हालत पर नज़र दौड़ाइये। मानव हृदय से नैतिकता, दया, प्यार, शान्ति, भाई-चारे का जनाज़ा उठ चुका है। अब तो इन्सान, मूल्यों से रहित होकर मात्र हाड़-माँस के पुतले को ढोता हुआ नज़र आ रहा है।

जिस प्रकार से रावण का पुतला बना कर तैयार कर दिया गया हो और मात्र तीली लगाना बाकी रहता हो, उसी प्रकार, महापरिवर्तन के लिए प्रकृति का प्रकोप, विज्ञान के विनाशकारी साधन और मानव की तमोगुणी प्रवृत्तियाँ – तीनों सम्पूर्ण साज सजा कर बैठे हैं। तीनों द्वारा एकजुट होकर अपना-अपना ताण्डव करने की देरी है, जब तीनों उग्र रूप धारण करेंगे तो साधारण मानव के सामने उन्हें झेलने के अलावा कोई चारा नहीं होगा।

लेकिन शिव बाबा के वे बच्चे जो तपस्वी हैं, ज्ञान-योग से सम्पन्न हैं तथा मनोबल के धनी हैं, उन विनाशकारी चुनौतियों का सरलता से सामना कर पायेंगे। प्यारे बाबा ने यह पाठ पक्का कराया है कि आप बच्चे अपने यादगार चित्रों में भी सभी को रहम का दान देते हो तो इस समय चेतन रूप में भी बहुत-बहुत रहमदिल बन सेवा करनी है। आपका लक्ष्य होना चाहिए कि सृष्टि की एक भी आत्मा, ईश्वरीय सन्देश ग्रहण किए बिना, अकाल मृत्यु का शिकार न हो। भले ही विनाशकारी साधन और प्रवृत्तियाँ मानवजाति को निगलने की तैयारी में हैं लेकिन आपको एक-एक आत्मा को मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता दिखाने की तैयारी में रहना है। कोई मुक्ति का रास्ता अपनाता है या जीवनमुक्ति का, यह उसके पुरुषार्थ पर आधारित है। पर आपको दोनों ही रास्ते हर एक आत्मा को दिखाने हैं, एक भी वंचित न रहे। प्यारे बाबा के इस आदेश का पालन करने के लिए हमें अपना मनोबल अथवा ज्ञान, गुण, शक्तियों का खज़ाना पूरी तरह भरपूर रखना है। अन्तर्मुखता की गुफा में बैठने से, मनसा, वाचा, कर्मणा सब कुछ सफल करने से, शक्तिशाली समर्थ संकल्प उत्पन्न करने से, हरेक के प्रति शुभभावना, शुभकामना रखते हुए, क्षमाशील, रहमदिल, मास्टर दाता बनने से तथा आत्म-स्मृति और परमात्म-स्मृति में रह कर श्रेष्ठ कर्म करके पुण्य का खाता समृद्ध करने से मनोबल बढ़ जाता है। इसके लिए इन्द्रियों के आकर्षण, पुराने स्वभाव, संस्कार, आदतें, लोक-लाज, इच्छाएँ, मोह आदि मनोबल को क्षीण करने वाले सुराखों से सदा बच कर रहना है।



# गृहस्थ में ब्रह्मचर्य - समय की माँग

- ब्रह्माकुमारी शकुन्तला, चरखी दादरी

सृष्टि परिवर्तनशील है। इसमें आने वाले चारों युग परिवर्तन के ही पर्याय हैं। हर युग की अपनी विशेषता रही है। द्वापरयुग से नैतिक मूल्यों का ह्रास होना प्रारम्भ हुआ और कलियुग के अन्त में हम उसका दुष्परिणाम भुगत रहे हैं। जैसी-जैसी परिस्थितियाँ आई, वैसी-वैसी ही महान् आत्माओं ने, धर्म-स्थापकों ने, समाज सुधारकों ने उन पर चोट की और मानवता को दु:खी होने से किसी हद तक बचाया। जैसे-जैसे पीढ़ियाँ बदलती गईं, समस्याओं का रूप भी बदलता गया। समाज सुधारकों ने समस्या के अनुरूप ही समाधान भी बताए। समय-समय पर आने वाले धर्मों ने समय की माँग को ध्यान में रखते हुए किसी एक नैतिक मूल्य पर जोर दिया। क्रिश्चियन धर्म के उदय के समय मानव का मानव से प्यार और मानव का ईश्वर से प्यार कम हो गया था इसलिए क्राइस्ट ने अन्य सभी शिक्षाओं के साथ इस पर अधिक बल दिया। जैन धर्म में मुख्य रूप से अहिंसा पर बल दिया गया है क्योंकि उस समय मनुष्य हिंसक प्रवृत्तियों वाला बन गया था। राजा राममोहन राय का सतीप्रथा और बालविवाह जैसी सामाजिक कुरीतियों से सामना हुआ। समाज सुधार की वह विधि जो पहले एक धर्मपिता द्वारा प्रयुक्त हो चुकी, अन्य धर्मपिता या समाज सुधारक के द्वारा प्रयोग में नहीं लाई गई क्योंकि वह विधि उस समय, स्थान, व्यक्ति और परिस्थिति के लिए ही उपयुक्त थी। व्यक्ति, परिस्थिति, स्थान और समय बदल जाने से वही युक्ति समस्या से मुक्ति दिलाने में समर्थ नहीं होती है।




**समस्या बदलती है तो समाधान का तरीका भी बदल जाता है**

जैसा कि सर्वविदित है कि रोग मिटाने हेतु दी जाने वाली दवा उस समय तो कड़वी ही लगती है परन्तु बाद में उसका परिणाम सुखद लगता है। मानवता व ईश्वर से प्रेम का पाठ पढ़ाने वाले ईसाई धर्म के संस्थापक ईसा मसीह की शिक्षाएँ उस समय के समाज को कितनी कड़वी लगीं जो उन्हें सलीब पर लटका दिया गया जबकि आज पृथ्वी पर सबसे अधिक अनुयायी इसी धर्म के हैं। जब महर्षि दयानन्द जी ने सारे देश में घूम-घूम कर कुरीतियों और कर्मकाण्डों पर अपनी ओजस्वी वाणी का प्रहार करना शुरू किया तो बहुत से लोग बौखला गए और परिणामस्वरूप उन्हें भी विष का प्याला पीना पड़ा। अहिंसा के पुजारी महात्मा गाँधी भी अपने ही देश में हिंसा के शिकार हो गए लेकिन आज भारतवासी उनके द्वारा दिलाई गई आजादी का हर 15 अगस्त को जश्न मनाते हैं। मानवीय समाज की पुरानी आदत रही है कि जब-जब कोई समाज सुधारक या समाज हितैषी

समाज की समस्याओं को दूर करने का प्रयास करता है तो उसे यही प्रतिक्रिया मिलती है कि ऐसा तो आज से पहले किसी ने नहीं सुनाया, ऐसा तो कहीं भी नहीं लिखा हुआ है, यह तो शास्त्र सम्मत नहीं है, ऐसा करना तो असम्भव है। आश्चर्य तो तब होता है जब संसार का बुद्धिजीवी वर्ग भी इसी प्रकार की प्रतिक्रिया करता है। जबकि हम भली-भाँति जानते हैं कि समस्याएँ जब रूप बदल-बदल कर सामने आ रही हों तो समाधान की विधियाँ भी तो बदलेंगी। बीमारियाँ बदलती हैं तो दवाएँ भी बदलती हैं। अब टी.बी. की दवा कैन्सर के लिए, कैन्सर की दवा एच.आई.वी. संक्रमण के लिए कैसे प्रयोग में लाई जा सकती है। यदि आज कोई राजा राममोहन राय हमारे देश में आते हैं तो उन्हें सतीप्रथा या कन्यावध जैसी समस्या के स्थान पर इसी का परिवर्तित रूप दहेज-प्रथा और भ्रूण-हत्या की समस्या मिलेगी जिसके समाधान का तरीका जरूर पहले से भिन्न होगा।

जरा सोचिए! आज से 1500 वर्ष पहले जब शंकराचार्य जी ने संन्यास धर्म की नींव डाली थी तो कोई कम प्रतिक्रिया हुई होगी जबकि एक घर का मुखिया, घर परिवार की आमदनी का आधार और वही पारिवारिक जिम्मेवारियों से मुँह मोड़ कर, सुख-सुविधा विहीन कष्टकारक जीवन यापन करे। लेकिन उस समय के समाज को बचाने का इससे अच्छा साधन और कोई हो ही नहीं सकता था क्योंकि मानव अत्यधिक भौतिकवादी बन गया था और विषय वासना के गर्त में तेजी से धँसता जा रहा था, समाज को सम्बल संन्यास धर्म के द्वारा मिला और सृष्टि की गिरावट की रफ्तार को कुछ अवरोध लग पाया। संन्यास धर्म के द्वारा जहाँ मानवता में नैतिकता का बल आया वहाँ जनसंख्या को कम करने में भी सहयोग मिला। यदि उस समय इतने संन्यासी न बनते तो भारत कभी का काम-अग्नि में जल कर भस्म हो गया होता। पर हर वस्तु अपनी चौथी स्टेज में पहुँच कर शक्तिहीन तो होती ही है अत: आज इतने सब संन्यासियों के होते हुए भी अनैतिकता के घोड़े बेलगाम दौड़े जा रहे हैं।

## परिवार नियोजन – कामुकता के खुले गगन में विचरण

अब जबकि यह कार्य ऋषियों-मुनियों, समाज सुधारकों से नहीं बन पाया तो विज्ञान ने मनुष्य की कामुकता के आगे घुटने टेकते हुए यह ऐलान कर दिया कि यह तो प्राकृतिक है और कि इसे तो नहीं रोका जा सकता पर ऐसा तरीका निकाला जाए जिससे कम-से-कम बेतहाशा बढ़ती हुई जनसंख्या पर तो रोक लगे और अब परिवार नियोजन के द्वारा जनसंख्या को बढ़ने से रोकने के उपाय होने लगे। इससे जनसंख्या की वृद्धि दर में तो कमी आई लेकिन विज्ञान के परिवार नियोजन ने मानवता को कामुकता का खुला गगन विचरण हेतु प्रदान कर दिया जिससे पहले की सभी सामाजिक और पारिवारिक मर्यादाओं को मनुष्य ने ताक पर रख दिया। इससे चारों ओर समाज में दूषित वातावरण फैलने लगा और दुराचार की घटनाएँ बढ़ने लगीं। यह धरा जो कभी शिवालय थी वेश्यालय बन गई। पिछले कुछ वर्षों से इसका एक भयंकर परिणाम मानवता के सामने आया है और वह है लाइलाज बीमारी एड्स। दुनिया के सभी देश इस बीमारी की गिरफ्त में आ चुके हैं। महामारी का रूप ले चुकी इस बीमारी की शुरूआत से अब तक पूरी दुनिया में 3 करोड़ 94 लाख से भी ज़्यादा लोग एच.आई.वी. संक्रमण का शिकार हुए हैं। अकेले एशिया महाद्वीप में ही इस समय एड्स रोगियों की संख्या 82 लाख हो गई है।

यह बीमारी स्पष्ट रूप से मानव के अमर्यादित और उच्छृंखल जीवन

शेष पृष्ठ.....25 पर

# आज्ञा-भंग की सजा

– ब्रह्माकुमार देवेन्द्रनारायण पटेल, मुलुण्ड (मुम्बई)

कहा जाता है कि घोड़े से गिरा सम्भल सकता है, नज़रों से गिरा नहीं सम्भल सकता। कोई नज़रों से कब गिरता है, जब वह अपने पालक, रक्षक, स्नेही, विश्वासपात्र, मार्गदर्शक, श्रद्धेय या आश्रय देने वाले की आज्ञा का उल्लंघन करता है या उसके साथ विश्वासघात करता है, छिप-छिप कर चोरी, ठगी, जारी (चरित्रहीनता) आदि के कार्य करता है। अत: हर व्यक्ति को अपने पर उपकार करने वाले के प्रति कृतज्ञ होने का जी-जान से प्रयास करना चाहिए। जिस क्षेत्र में भी वह कार्यरत है, वहाँ के नियम-कानूनों का पूरी तरह पालन करना चाहिए, इच्छाओं-तृष्णाओं के वश 'लक्ष्मण रेखा' का उल्लंघन नहीं करना चाहिए। इतिहास में ऐसी अनेक घटनाएँ वर्णित हैं जब किसी को उसके विश्वासघात के बदले मौत के घाट उतार दिया गया। प्रस्तुत घटना नेपोलियन बोनापार्ट के जीवन की है –

विश्व विजेता बनने का स्वप्न देखने वाला नेपोलियन एक दिन अपनी विराट सेना के साथ शत्रु पर आक्रमण करने के लिए आगे बढ़ रहा था। एक जंगल में उनका पड़ाव था। संध्या होते ही नेपोलियन ने आज्ञा फरमाई, 'ब्लैक आऊट (सम्पूर्ण अन्धकार)', कोई भी सैनिक रात्रि में दीपक नहीं जलाएगा। सभी सैनिकों ने स्वामी की आज्ञा शिरोधार्य की। नेपोलियन, वेष परिवर्तन करके सभी तंबुओं का रात्रि में निरीक्षण करने लगा। अचानक एक तंबू में उसे प्रकाश दिखाई दिया, निकट जाकर देखा कि एक सैनिक मोमबत्ती के प्रकाश में कुछ लिख रहा था। नेपोलियन ने सिंह-सी गर्जना करते हुए पूछा – "क्या कर रहे हो ? मेरी आज्ञा नहीं सुनी थी ?" सैनिक काँपने लगा। थरथराती आवाज में बोला – "सुनी तो थी पर मुझे क्षमा करें, पत्नी की अचानक याद आ गई, उसे पत्र लिखने बैठ गया।" नेपोलियन ने कहा – "ठीक है, पत्र में इतना जोड़ दो कि मैंने आज्ञा-भंग करके यह पत्र लिखा है और आज्ञा-भंग की सजा में मुझे मौत मिल रही है। मेरा यह अंतिम पत्र है, अब मैं तुम्हें इस दुनिया में नहीं मिल पाऊँगा।" बेचारा सैनिक क्या करता! नेपोलियन की आज्ञा से उसे पत्र में इतना और जोड़ना पड़ा। पत्र पूरा होते ही नेपोलियन ने उसे गोली से उड़ा दिया।

ज़रा सोचें! नेपोलियन अर्थात् एक मानव, उसकी आज्ञा-भंग करने वाले को मौत की सज़ा मिली तो जो परमात्मा की आज्ञाओं को भंग करता है उसे क्या सज़ा मिलेगी ? शिव बाबा हमें प्रतिदिन की शिक्षाओं में कहते हैं – "बच्चे, पवित्र बनो, विकार में मत जाओ, कुमार हो तो कुमार होकर ही रहो, कुमारी है तो कुमारी होकर रहो, निर्विकारी होकर जिओ, चरित्रवान बनो और सर्वगुण सम्पन्न बन जाओ .....।"

जो परमात्मा की इस आज्ञा को सुन तो लेते हैं पर इन्द्रियों के वशीभूत होते रहते हैं या चिकने घड़े जैसा व्यवहार करते हैं। उनकी क्या गति होगी ? धर्मराज का उनके साथ कैसा सलूक होगा ? घोड़े से गिरा व्यक्ति कपड़े झाड़ कर खड़ा हो जाता है, थोड़ी चोट आदि लगी हो तो मरहम-पट्टी करवा सकता है परन्तु जो शिक्षादाता, सद्‌गतिदाता, गुण, ज्ञान, शक्तिदाता परमात्मा पिता की नज़रों से ही गिर जाता है तो उसे उठाने वाला कोई नहीं रहता है। अत: विकर्मों और अनुशासनहीनता को बार-बार नहीं दोहराओ। प्यारे बाबा के नयनों के नूर बनो। 

# जीत है वहाँ, प्रभु-प्रीत है जहाँ

– ब्रह्माकुमारी त्रिवेणी, बारीपदा (उड़ीसा)



मेरा एक भाई जिसका नाम सरविस है और जो कलकत्ता में भारतीय भौगोलिक सर्वेक्षण विभाग में सहायक इंजीनियर है, उसको संकल्प आया कि सरकार मुझे, त्रिवेणी बहन तथा माताजी के नाम से एल.टी.सी. देती है पर वे कभी भी मेरे साथ घूमने नहीं गईं। अत: उसने अण्डमान द्वीप की तरफ घूमने और साथ-साथ ईश्वरीय सेवा करने का कार्यक्रम बनाया। इस उद्देश्य से मेरे तीन भाई, माताजी तथा मैं कटक से 13 दिसम्बर, 04 को रवाना हुए और 19 तारीख रात को 10 बजे हमने पोर्ट ब्लेयर की धरनी पर पाँव रखा। जिस जहाज से हमने सफर किया उसमें लगभग 1100 यात्री थे। कैप्टन साहब को जब पता चला कि ये सभी आध्यात्मिक ज्ञान जानते हैं तो उन्होंने कभी सुबह तथा कभी शाम, प्रतिदिन दो घण्टे यात्रियों को ज्ञान सुनाने की सुविधा हमें दी। यात्री लोग कहते थे कि आप अण्डमान में भी आश्रम खोलने की कोशिश कीजिए। उन सभी को हमने 'ओम शान्ति सन्देश' नामक छोटी-छोटी पुस्तिकाएँ भेंट कीं और तनावमुक्ति तथा राजयोगाभ्यास के बारे में विस्तार से समझाया।

बीस दिसम्बर सुबह से 25 दिसम्बर रात तक हमारा घूमने का कार्यक्रम चलता रहा। साथ-साथ अण्डमान में सेवाकेन्द्र खुले, उसके लिए सुविधाजनक स्थान भी देखते रहे। इसी सम्बन्ध में 24 दिसम्बर को वहाँ के राज्यपाल से भी मिले। वे मधुबन आ चुके हैं। उन्होंने हमको बहुत सम्मान दिया और साथ ही आश्वासन दिया कि आप यहाँ भले ही ईश्वरीय सेवा करें, हम आपको हर प्रकार की मदद देंगे। हमारा लक्ष्य 27 दिसम्बर तक वहाँ ठहरने का था। ईश्वरीय सेवा का सुन्दर मौका मिलने पर हम यह अवधि बढ़ाने को भी तैयार थे परन्तु ड्रामा की भावी कुछ और ही थी। दिसम्बर 26 तारीख की सुबह ने अचानक जो दृश्य उपस्थित किया उसने सारे विश्व को हिला कर रख दिया।

### पाँव सुरक्षित स्थान की ओर

अण्डमान के ग्याराचर्मा क्षेत्र की बातुबस्ती के पास एक मकान की तीसरी मंजिल के 2 कमरों में हम ठहरे थे। परमरक्षक प्यारे बापदादा ने गुजरात के भूकम्प के समय उच्चारे गए महावाक्यों में एक बार कहा था – जिन बच्चों का बुद्धियोग एक बाप से होता है, बाबा उनका हर पल रक्षक और साथी है। कोई भी विपत्ति आने पर ऐसे बच्चों का पाँव विपत्ति के बजाए सुरक्षित स्थान की ओर स्वत: बढ़ता है। हमारे साथ ऐसा ही हुआ। पहले हमारा कार्यक्रम समुद्र के बिल्कुल किनारे पर बने एक गेस्ट हाउस में रहने का था परन्तु अचानक उपस्थित हुए किसी कारण से हमें समुद्र से 4 कि.मी. दूर निवास मिला। प्रकृतिजीत, मुसीबतजीत बनाने वाले बाबा ने भले समय से ही हमारे पाँव विपत्ति से दूसरी तरफ फिरा दिए और हम समुद्र के आक्रामक तेवरों से बच गए।

### क्या भगवान ने पहले से सन्देश दे दिया था?

दिसम्बर 25 की रात को स्थानीय लोगों ने देर रात तक क्रिसमस हर्षोल्लास के साथ मनाया और अगले दिन रविवार होने के कारण जल्दी उठने की चिन्ता से मुक्त होकर निश्चिन्तता के साथ सो गए। हम सभी ने भी रात्रि $11^1/_2$ बजे परमात्मा पिता को शुभरात्रि (गुड नाइट) कह विश्राम किया। इतनी देरी से सोने के बाद भी प्यारे बाबा ने मुझे दो बजे उठा दिया। अक्सर मैं $3^1/_2$ बजे उठती हूँ लेकिन उस दिन 2 बजे भी स्वयं को काफी तरोताजा महसूस किया। माताजी तथा भाइयों ने कहा कि थोड़ा आराम और कर लो पर मुझे बिल्कुल नींद नहीं आई। थोड़ा समय प्यारे बाबा को याद कर मैं नहा-धो कर तैयार हो गई। मुझे देख माताजी और भाई भी तैयार हो गए। लगभग

$6^1/_2$ बजे हम सभी ईश्वरीय महावाक्य पढ़ने की तैयारी में थे परन्तु तभी अचानक सारी इमारत इतनी जोर से हिली जैसे कि कोई झूला झुला रहा हो। मैं समझ गई कि यह भूकम्प है। सोए हुए लोगों को जगाने के लिए मैंने जोर से आवाज लगाई – 'भूकम्प आ रहा है, सब घर से बाहर निकल आओ।' तीन मंजिल की उस इमारत में लगभग 15 परिवार थे। सब एक साँस में नीचे उतर गए तथा आस-पास रहने वाले क्रिश्चियन भाई-बहनों के साथ हम सभी बाहर खुले मैदान में इकट्ठे हो गए। जब हमने इस इमारत में कदम रखा था तो पहला शुभ कार्य यह किया था कि यहाँ के सभी रहवासियों को तथा मकान मालिक को ईश्वर पिता का सत्य परिचय देने की कोशिश की लेकिन उन्होंने कहा कि क्राइस्ट कहता है – 'गॉड इज लव, लव इज गॉड' अत: हम आपको प्रेम करते हैं, आप बहुत अच्छे हैं, परन्तु हमें आपका ज्ञान सुनने की फुर्सत नहीं है। परन्तु भूकम्प के एक झटके ने सभी को इतनी फुर्सत दे दी कि सभी, सब कुछ छोड़ कर, धड़कते कलेजे को लेकर मैदान में एकत्रित हो गए और हमसे पूछने लगे – **"क्या आपके भगवान ने आपको पहले से ही सन्देश दे दिया था कि भूकम्प आने वाला है जो आप नहा-धोकर तैयार हुए नजर आ रहे हो? आप तो मन से भी और तन से भी तरोताजा लग रहे हो। आपके चेहरे पर चिन्ता की कोई रेखा नहीं है। आप मेनलैण्ड से एक आईलैण्ड में आए हो, आप लोग यहाँ के जीवन के अभ्यस्त नहीं हो फिर भी आप निश्चिन्त नजर आ रहे हो। आपके पास कौन-सी शक्ति है जिसने आपको चिन्तामुक्त कर दिया है। हमें भी सुनाइये, हमें भी चिन्तामुक्त कीजिए।"** उस समय उन सबके अन्दर बहुत वैराग्यवृत्ति थी। उनके हाथ में एक रूमाल भी नहीं था और वे अपने घरों में झाँकने को भी तैयार नहीं थे। प्रकृति के एक तत्व की मार ने उनको पल भर में बेघर बना दिया था। उन्होंने दिल लगा कर ज्ञान की बातें सुनी, हमारा भी और प्रभु का भी शुक्रिया माना तथा उसकी याद से मन को हल्का करने की कोशिश में लग गए।

बुजुर्गों का साथ, साया और उनके प्रति हमारा देखभाल का नजरिया भी हमें कई मुसीबतों से बचा देता है। एक स्थान जिसका नाम था बाराटांगरा, वहाँ नाव से जाने का हमने कार्यक्रम बनाया था परन्तु हमें बताया गया कि नाव से यात्रा के बाद भी 4 कि.मी. पैदल चलना पड़ेगा। अपनी माताजी की वृद्धावस्था को देखते हुए हमने सोचा कि उनको तकलीफ नहीं देनी है। अत: वहाँ जाने का कार्यक्रम रद्द कर दिया। माताजी के प्रति इस रहम भाव ने हमको बचा लिया अन्यथा नाव के द्वारा वापस लौटते समय 26 तारीख, सुबह 4 बजे से ही हम समुद्र में होते और पानी की उछाल हमें भी न जाने किस दिशा में पटक देती। बाहर मैदान में हम 12 बजे तक बैठे रहे। फिर एक पड़ोसी ने, जिसका लकड़ी का मकान था, कहा – "मेरे यहाँ आओ और स्वयं खाना पका कर खा लो क्योंकि आप होटल में तो खायेंगे नहीं।" सारी रात हमने उसी मकान में योग किया। आसपास के लोग भी सारी रात नहीं सोये। समुद्र के बिल्कुल किनारे पर जो लोग थे उनकी तो बहुत तबाही हुई। जब भूकम्प आया तो किनारे पर बने होटलों में से लोग जल्दी-जल्दी बाहर मैदान में आ गए परन्तु यह विपत्ति ऐसी थी जिसमें वे बाहर न आते तो शायद बच जाते क्योंकि भूकम्प के झटके इतने खतरनाक नहीं थे जो मकान गिरें परन्तु बाहर आने पर उन्हें पानी की लहरें, तिनके की तरह बहा ले गईं। इसके बाद तो पानी लगभग शान्त हो गया।

**ईश्वरीय ज्ञान बहुत काम आया**

हमने एयरपोर्ट में जाकर टिकट लेने की कोशिश की परन्तु नहीं मिल पाई। एयरपोर्ट का भी नुकसान हुआ था। परन्तु हेलीकॉप्टर जिन लोगों को पानी के खूनी पंजों से बचा कर ले आया था उनकी भीड़ एयरपोर्ट में जमा थी। उन सबका हाल बड़ा दर्दनाक था। कई रो रहे थे, कई सिसक रहे थे, कई मायूस खड़े थे, किसी ने बच्चा, किसी ने पत्नी, किसी ने पिता, माता या भाई आदि खो दिए थे। उन्हें देख दिल से रहम भावना फूट पड़ी। उनको धीरज देते हुए हमने कहा कि परमात्मा पर विश्वास रखो और हिम्मत ना हारो। परिस्थिति का मनोबल से सामना करो। दिसम्बर 27 को भगवान भरोसे जहाज में बैठ हम वापसी यात्रा के लिए चल पड़े। रास्ते भर समुद्र शान्त रहा परन्तु

जहाज के यात्री दु:ख और चिन्ता से भरे हुए थे। एक लड़के ने समाचार सुनाया कि मैं अण्डमान से चेन्नई जा रहा हूँ परन्तु निकोबार में रह रहे अपने माता-पिता के बारे में बहुत ही चिन्तित हूँ। एक स्कूल का शिक्षक जो बच्चों को लेकर घूमने गया था, बहुत ही घबराया हुआ था परन्तु बच्चे सभी सुरक्षित थे। वापसी यात्रा में कुछ लोग ऐसे भी थे जो जाते समय भी हमारे साथ थे। उस समय उन्होंने जो ज्ञान सुना था उसकी उपयोगिता की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि **भगवान ही रक्षक है, भगवान का ज्ञान हमें बहुत काम आया, उसी की बदौलत हमारी रक्षा हुई है। जैसे कौरवों की सभा में द्रोपदी की लाज बची थी, ऐसे इस प्रलयंकारी दृश्य में हम भी बच गए, आप हमें और ज्ञान देकर धन्य-धन्य कीजिए।** इस प्रकार सभी यात्रियों को दिलासा तथा मनोबल देते हुए हम मद्रास होते हुए 6 जनवरी को उड़ीसा में अपने स्थान पर सकुशल पहुँच गए।

प्यारे बापदादा की याद में, उन सभी आत्माओं के प्रति मेरे दिल में गहरी सहानुभूति है जिन्होंने इस प्राकृतिक विपत्ति में अपना सब कुछ खोया है। उन आत्माओं को शान्ति मिले जो शरीर रूपी वस्त्र को त्याग अगली यात्रा के लिए रवाना हो गई हैं। मैं, परिवार सहित सुरक्षित अपने स्थान पर पहुँची हूँ, यह प्यारे बापदादा तथा ब्राह्मण परिवार की दुआओं का प्रतिफल है।



# गिरा दो दीवारें - मिटा दो लकीरें

– ब्रह्माकुमार राजवीर, बड़ौत

दिलों से दिलों की जो दूरी बढ़ाये,
जो भाई को भाई का दुश्मन बनाये, ऐसी सभी तुम,
**गिरा दो दीवारें, मिटा दो लकीरें।**

टुकड़े-टुकड़े कर दिये धरती के काट कर,
सोचो तो क्या मिला तुम्हें सीमाएँ बाँट कर,
गाँव-प्रदेश की, देश और विदेश की,
**गिरा दो दीवारें, मिटा दो लकीरें।**

एक-दूसरे पे गर हमें ऐतबार नहीं है,
क्या खाक है जीवन में यदि प्यार नहीं है,
रंग,रूप, वेश की, ईर्ष्या और द्वेष की
**गिरा दो दीवारें, मिटा दो लकीरें।**

जो लड़ते हैं, लड़ाते हैं अल्लाह के नाम पर,
वो बदनुमा-से दाग हैं इन्साँ के नाम पर,
हिन्दू-मुसलमान की, जाति और जबान की
**गिरा दो दीवारें, मिटा दो लकीरें।**

मासूम बेबसों पे चलाते हैं गोलियाँ,
एक-दूसरे के घर की जलाते हैं होलियाँ,
आपसी विवाद की, दंगे और फसाद की
**गिरा दो दीवारें, मिटा दो लकीरें।**

आज पैसा ही इन्सान का भगवान हो गया,
हर रिश्ता इसके सामने बेजान हो गया,
स्वार्थ के बाजार में ईमान खो गया,
ओ आदमी, तू कितना परेशान हो गया,
अमीर और गरीब की, दोस्त और रकीब की
**गिरा दो दीवारें, मिटा दो लकीरें।**

आपस में भाईचारा हो, उल्फत हो, अमन हो,
तो जन्नत से भी हसीन, अपना ये चमन हो,
जिस्मानी धूप-साये की, अपने और पराये की
**गिरा दो दीवारें, मिटा दो लकीरें।**

हम कौन हैं? और किसके हैं? इसको तो जानिये,
रूहानी मजहब प्रेम है उसको ही मानिये,
विकृत समाज की, रीति और रिवाज की
**गिरा दो दीवारें, मिटा दो लकीरें।** ❑❑

*अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष........*

# बचाइये, कन्या-भ्रूण को काल के गाल से

– ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

कन्या एक ऐसा रत्न है जिस पर कोमलता का आवरण है। लोग इस कोमल आवरण की कोमलता को तो देखते हैं परन्तु इसके भीतर छिपे उस गुणभण्डार को नहीं देख पाते जो समाज के ज़हर को अमृत में बदलने में सक्षम है। आज माता-पिता, भौतिक प्रकाश से चौंधियाई हुई आँखों से देखते हुए इस रत्न से पीछा छुड़ाने की कोशिश में बहुधा इसे असक्षम जवाहरी को सौंप देते हैं जहाँ उसे कंकर समझ कर ठोकरों में मिला दिया जाता है। माता-पिता और समाज के ऐसे दृष्टिकोण ने एक भयावह समस्या को जन्म दे दिया है।

जो लोग कहते हैं कि कन्या अभागी है या नारी अभागी है, वास्तव में वे खुद अभागे हैं। जैसे सावन के अन्धे को सब हरा नज़र आता है ऐसे ही अभागे लोगों को भी कन्या रूपी रत्न भी कीमतहीन नजर आता है। परन्तु ज़रा सोचिए, यदि बन्दर अदरक को यह कह कर फेंक दे कि उसमें स्वाद नहीं है तो इसमें किसकी घटती है, बन्दर की या अदरक की? वास्तव में अदरक तो अदरक ही रहेगी परन्तु बन्दर की बुद्धि का दिवालियापन उजागर हो जाएगा। इसी प्रकार, नारी तो नारी ही है, गुणमूर्ति, त्यागमूर्ति, सहनशीलता की मूर्ति परन्तु उसे डरा कर, मार कर, घर से निकाल कर, अधिकार छीन कर मानव ने स्वयं के भाग्य को लकीर लगाई है। तो देखिए समाज की तस्वीर! क्या वह सुखी है आज, क्या कहीं शान्ति है उसके पास? जितना पुरुष का देहभान बढ़ता है, उसे रावण और ज़ोर से सताता है, फिर वह आक्रामक होकर नारी पर टूट पड़ता है चाहे काम की हिंसा के रूप में या क्रोध के रूप में परन्तु इससे उतनी ही ज्यादा उसकी जीवनशक्ति सूखती जाती है। इससे उत्तेजित होकर वह पुन: नारी पर अत्याचार करता है और इस प्रकार महापाप के चक्र में फँसता जाता है।

### जटिल होती समस्या

वर्तमान समय देश और समाज के प्रबुद्ध चिन्तकों के सामने एक जटिल प्रश्न आत्म-मंथन का पैगाम लेकर तेजी से उभरा है और वह है घटती महिला जन्म दर का प्रश्न। अनेक संस्थाएँ, धर्म और व्यक्ति इस घटती जन्म-दर के कुपरिणामों से समाज को अवगत कराने की मुहिम में जुट गए हैं। सरकार भी इस बारे में कानूनों की कड़ाई की ओर कदम बढ़ा रही है। यह प्रश्न केवल महिला अस्तित्व के ही नहीं वरन् समग्र मानव जाति के अस्तित्व के समक्ष चुनौती बन कर उभर रहा है। परन्तु प्रश्न यह है कि क्या आन्दोलित होता हुआ समाज उन कारणों के निवारण के प्रति प्रतिबद्ध होना चाहता है जिनके चलते यह विकराल समस्या उभरी है। समस्या का यह ज्वालामुखी एक दिन में नहीं बना है। जैसे बीमारी के लिए इलाज से बेहतर परहेज है इसी प्रकार इस समस्या के सम्बन्ध में मूल प्रश्न महिला की गरिमा और गौरव का है। एक मोटे-से उदाहरण से हम इस बात को समझ सकते हैं। मान लो किसी किसान ने गेहूँ बहुत उगा लिया पर कोई भी उसका खरीददार नहीं मिला, गेहूँ रुलता रहा और किसान उत्पादित गेहूँ को घर में भी सम्भाल कर नहीं रख सकता क्योंकि कीड़े खा जायेंगे, घर भी छोटा है। ऐसे में उसका उत्पादन उसके जी का जंजाल बन जाता है और समाज में उसकी ऐसी उपेक्षा और दुर्गति देख कर वह अगले सीज़न में गेहूँ नहीं उगाएगा और जिस-जिस अन्य

किसान को भी गेहूँ की इस कीमतहीन स्थिति का पता पड़ेगा वह भी उसे उगाने से कतराएगा।

### वर्तमान समाज में नारी की स्थिति

इस उदाहरण से हम नारी की जो वर्तमान स्थिति समाज में है उसे समझ सकते हैं। आज संसार की 80% नारियाँ किसी-न-किसी रूप में अन्याय, शोषण, दबाव, अधीनता, हिंसा की शिकार हैं। केवल अशिक्षित और गरीब तबके की नारियाँ ही नहीं बल्कि अमीर घरों की और पढ़ी-लिखी नारियाँ भी किसी-न-किसी रूप में पुरुष प्रधान समाज के पारिवारिक कुरिवाजों द्वारा या दफ्तरों में अभद्र व्यवहार के द्वारा सताई जाती हैं। भारत, नेपाल, पकिस्तान, बांग्लादेश व श्रीलंका की महिलाओं के संयुक्त संगठन द्वारा एक कार्यशाला में जो कुछ बताया गया उसका हवाला देते हुए डॉ. दीपा ने अपने एक लेख 'नर्क की यातना भोगती औरत' (दैनिक नवज्योति) में लिखा है – "कार्य-शाला की मुख्य अतिथि अमेरिका की डॉ. मार्या ने यह चौंकाने वाली दर्दनाक सूचना दी कि पहली दुनिया के देश की पढ़ी-लिखी प्रबुद्ध नारी भी पति के हाथों पिटती है और शोषण की शिकार होती है। अपने जीवन से उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि उनकी प्रोफेसर माँ की उनके पिता द्वारा निर्मम पिटाई की जाती थी जिसका इतना प्रतिकूल प्रभाव उनके बाल-मन पर पड़ा कि सत्रह वर्ष की आयु में उन्हें एक वर्ष के लिए एक मानसिक अस्पताल में भर्ती रहना पड़ा। पाकिस्तान की प्रतिनिधि डॉ. फरियाल गौहर ने बताया कि इस कट्टरपंथी देश में अपने परिवार की मर्यादा की रक्षा करने की आड़ में सरेआम औरतों का कत्ल कर दिया जाता है। दूध वाले से दूध में पानी मिलाने की शिकायत करना भी औरत द्वारा घर की इज्जत में खलल डालने वाला दण्डनीय अपराध बन जाता है और उसे पति या घर के पुरुष वर्ग द्वारा मृत्युदण्ड दिया जा सकता है। बीबीसी द्वारा पाकिस्तान के ऐसे पुरुषों के एक साक्षात्कार का हवाला देते हुए उन्होंने बताया कि इस प्रकार से औरतों की हत्या करने वालों में से एक को भी अपने किए पर पछतावा नहीं था। न्यायालय तक तो ऐसे मामले पहुँच ही नहीं पाते क्योंकि पुलिस व न्याय व्यवस्था के कर्त्ताधर्त्ता भी पुरुष हैं जो स्वयं इस प्रकार की मानसिकता के जनक हैं। राजस्थान में 'डाकन' की तरह पाकिस्तान में भी कुछ औरतों को 'कारो' घोषित कर दिया जाता है। जिसका सिंधी भाषा में अर्थ है 'काली' और 'कारो' औरतों के लिए अपने परिवार में वापिस लौटने के सभी दरवाज़े बन्द हो जाते हैं। वह या तो स्वयं आत्महत्या कर लेती है या उसके परिवार के खानदानी मर्द अपने परिवार की इज्जत को बहाल करने के लिए स्वयं ही उसकी हत्या कर देते हैं। पाकिस्तान में औरतें मात्र वस्तुएँ हैं जिनका अन्य भौतिक पदार्थों की तरह लेन-देन होता है।"

नारी के साथ ऐसा व्यवहार होता देख सबसे ज़्यादा आहत उसके माता-पिता होते हैं। शेष सब तो उसी पर अँगुली उठाते हैं या मूक दर्शक बनते हैं या व्यावसायिक, राजनैतिक लाभ के लिए उसका पक्ष लेने का दिखावा करते हैं। ऐसे में भविष्य में जो माँ-बाप बनने वाले हैं वे भी कन्या को जन्म देने से पहले हजार बार सोचते हैं और भयभीत भी रहते हैं। अत: वे संगठन जो कन्या भ्रूण हत्या के बारे में चिन्तित हैं, नीचे लिखे भयावह परिदृश्यों को मिटाने के प्रति प्रतिबद्ध हों तो समस्या को समूल नष्ट किया जा सकता है। ज़ब हर व्यक्ति, समाज, सरकार और स्वयं महिला भी आत्म-मंथन कर इस वीभत्स कृत्य के मूल कारणों को उखाड़ने के लिए उसी प्रकार प्रतिबद्ध होंगे जैसे भारत की आजादी के प्रति प्रतिबद्धता दिखाई गई थी, तो समस्या का समाधान होते

देर न लगेगी।

**कन्या भ्रूण-हत्या के लिए जिम्मेवार समाज के भयानक परिदृश्य**

**दैहिक शोषण** – कोई भी माता-पिता को सन्तान जान से प्यारी होती है परन्तु फिर भी उस जान से प्यारी सन्तान का गला दबाने की तरफ उसके हाथ बढ़ते हैं तो क्या इसके पीछे कुछ अति भयानक कारण नहीं होंगे? सर्वप्रथम हम नज़र डालते हैं उस भयानक कृत्य की तरफ जो 6 मास के ऊपर होते-होते अनेक कन्याओं के साथ घट जाता है। कितने किस्से सुनते हैं कि 6 मास की पोती से दादा ने बलात्कार कर लिया। दो साल की कन्या से इतने गुण्डों ने बलात्कार किया। एक मासूम फूल जो महात्मा समान है, उसके जीवन से खिलवाड़ करने वालों के मन में ये प्रवृत्तियाँ अनियन्त्रित काम-वासना के कारण उत्पन्न होती हैं। यह अनियन्त्रित काम-वासना पुरुष वर्ग में क्यों आई क्योंकि काम विकार का अनियन्त्रित प्रचार, साहित्य, संचार माध्यम और सभा-संगठनों द्वारा खुले तौर पर, बिना रोक-टोक के हो रहा है। इन बातों को बार-बार सुनने, पढ़ने, देखने से मानव मानो वासना का पुतला बन जाता है और विवेक की आँखें खोकर नारी जाति के अस्तित्व पर प्रश्न चिह्न लगाने वाला असुर बन जाता है। अब जो समाज माँ-बाप को भ्रूण-हत्या से रोकना चाहता है वह समाज जब तक इस काम के बहते नाले में आबालवृद्ध की गोता लगाने की खुली प्रवृत्ति पर रोक लगाने के लिए एकमत न हो तो क्या कन्या निरापद हो सकती है?

**अपहरण** – कन्या माँ-बाप की इज्जत बन जाती है। उसकी तरफ उठने वाली आँखें माँ-बाप के सम्मान, खानदान के सम्मान में सेंध डालना प्रारम्भ कर देती हैं। आज आए दिन कन्याओं को बहलाने, फुसलाने, उठाने, अपहरण करने के किस्से आते हैं। विद्या के मन्दिर भी इनसे अछूते नहीं। कुछ समय पहले घुमाने के बहाने ले जाई गई कन्याओं को नेपाल की सीमा पर बेचने के प्रयास में एक टीचर को पकड़ा गया। कितने मामले दब जाते हैं। तो जो समाज धनलोलुप है, जो चन्द चाँदी के टुकड़ों के लिए कन्या को पशु से भी बदतर समझ कर बेच सकता है उस समाज में कन्या को जन्म देते हर माँ-बाप का कलेजा काँपता है। यदि समाज कहता है कि भ्रूण-हत्या न हो तो वह भेड़-बकरियों से भी बदतर ढंग से बिकती, अमीरों के हाथों शोषित होती, वेश्यालयों की ज्वाला में झोंकी जाती कन्याओं को मुक्त करने की गारंटी दे तो कन्या जन्म-दर स्वत: बढ़ जाएगी। यह भी तब होगा जब कन्याओं के जिस्म की कमाई का जहर पीने वाले ये समझें कि कन्या की आत्मशक्ति का सदुपयोग विश्व को पवित्र बनाने में किया जाना चाहिए न कि उसके मजबूर जन्म का फायदा उठा कर उसके शरीर को कमाई का साधन बनाया जाए। रोटी के दो टुकड़ों के बदले उसे संसार में भयानक व्यभिचार पनपाने के निमित्त बनाना, कितना भयंकर विकर्म है!

**शादी में दहेज** – आज के समय में बच्चों की पढ़ाई, भोजन, कपड़ा, मकान आदि पर बहुत खर्च होता है। फिर बड़ी होती कन्या के दहेज की चिन्ता भी रहती है। एक बार, दहेज देकर मामला निपट जाए यह भी नहीं है बार-बार देने की समस्या बनी रहती है। हैसियत से ज्यादा देने की मजबूरी, वार-त्योहार पर देने की मजबूरी, इन सब में बँधा व्यक्ति सोचता है कि कन्या ना हो तो अच्छा है। हर दिन उसे दहेज जोड़ने का ओना रहता है। इस ओने ने कई माता-पिता से गलत काम करवाए। क्योंकि लड़की की डोली उठानी है तो गलत तरीके से भी धन का इन्तजाम करने को मजबूर हो जाते हैं। यदि हम कन्या जीवन को सम्मानित करना चाहते हैं तो इस मजबूरी को समाज से मिटाने की

गारंटी लें। नहीं तो ससुराल में ताने, मानसिक-शारीरिक कष्ट और वधू की हत्या तो आम बात है। जिस माँ-बाप का पैसा और पुत्री दोनों चले जाएँ और वह आँसू बहाने के सिवा कुछ न कर सके तो उसे देख अन्य दम्पति भी कन्या जन्म से भयभीत हो जाते हैं। इसके पीछे लोभ, बिना मेहनत का धन पाने की प्रवृत्ति तथा कर्म गति के ज्ञान की अज्ञानता है।

**रूप-कुरूप** – आज के समाज में चमड़ी और दमड़ी की कदर है। आवश्यक नहीं कि हर कन्या गोरी चमड़ी वाली और सुन्दर ही हो! ऐसी कन्याएँ जो किसी कारण सुन्दरता के नाम पर कम बैठती हैं उनके वर की खोज में माँ-बाप को एड़ी-चोटी एक करनी पड़ती है और कई प्रकार के अनावश्यक आर्थिक समझौते करने पड़ते हैं जैसे काली लड़की हो तो दहेज की कीमत बढ़ानी पड़ेगी। फिर काला होने का अभिशाप उसे आगे भी भोगना पड़ सकता है। कितने किस्से हैं जब पुरुष की गोरी चमड़ी की ललक ने उसे काली पत्नी को छोड़ गोरी से अवैध सम्बन्ध बनाने को मजबूर कर दिया। यह भी माँ-बाप के लिए एक सदमा होता है। सोचते हैं भगवान काली कन्या के स्थान पर ना दे तो अच्छा है।

उपरोक्त सभी कारण मानव निर्मित हैं। इनको मिटाए बिना कन्या भ्रूण-हत्या नहीं रुकेगी। जड़ को नष्ट किए बिना, पेड़ नहीं समाप्त होते। ये जड़ें सरकारी कानूनों से भी उखड़ने वाली नहीं हैं। इसके लिए व्यक्ति को अपने अन्तर्मन को टटोल कर उसमें बैठे क्रोध, लोभ, काम, मोह के असुरों को नष्ट करना पड़ेगा। समस्या को मिटाने के लिए माता-पिता, समाज, सरकार और कन्या को भी-अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन करना पड़ेगा।

(क्रमशः)

## आत्मिक खुशियाँ लेकर आई होली

– ब्रह्माकुमार रामनरेश आर्य, पत्रकार, माधौगंज

देशवासियो, जीवन में सद्‌गुणों से भर लो झोली।
आत्मिक खुशियों की मुलाकातें, लेकर आई होली।।
कोई नहीं बड़ा और छोटा, दिल से मैल निकालो,
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, सबसे हाथ मिला लो।
प्रेम के रंग में रंग दो सबको, पिचकारी ये बोली।।
**आत्मिक खुशियों की मुलाकातें .......**
पर्व निराला करे इशारा, स्नेह की छाप लगाओ,
मोबी आयल, रंग, कीचड़ की, प्रथा दूर भगाओ।
दिल से दिल का मिलन मना कर, भरो दुआ से झोली।।
**आत्मिक खुशियों की मुलाकातें .......**
आपस में मतभेद भुला कर, सबको गले लगाओ,
ईश्वर की सत् शिक्षा समझ कर, अपना फर्ज चुकाओ।
क्षणभर के अनुपम जीवन में, सजे सुखों की डोली।।
**आत्मिक खुशियों की मुलाकातें .......**
ईश्वर की सब हैं सन्तानें, भेदभाव को त्यागो,
ईर्ष्या, द्वेष, छल, अहंकार से, बहुत दूर अब भागो।
व्यसनों से गर बचे रहोगे, बन जाओगे होली (पवित्र)।।
**आत्मिक खुशियों की मुलाकातें .......** ❑

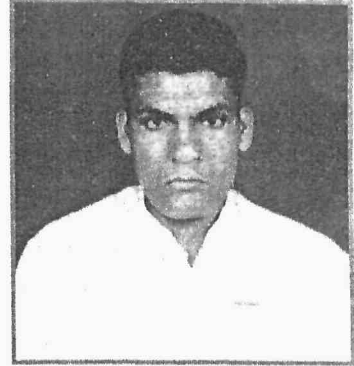
# प्रभु मिलन का प्रण पूरा हुआ

– ब्रह्माकुमार मणिराम, नेपालगंज

मेरा जन्म सुरखेत जिला, नेपाल के एक साधारण ब्राह्मण परिवार में हुआ। लौकिक पिताजी पण्डित और संस्कृत भाषा के बहुत बड़े विद्वान थे। वे भजन-कीर्तन करते रहते थे जिन्हें सुन कर सबके मन में वैराग्य आता था। मुझे भी इसी तरह वैराग्य आता गया। पिताजी ने एक कमरे में कई देवी-देवताओं की तस्वीरें लगा रखी थीं। मैं उनसे पूछा करता था कि भजन-कीर्तन से आपको क्या प्राप्ति होती है ? वे कहते थे कि यही साथ में जाने वाला है और कुछ भी साथ में नहीं जायेगा। मुझमें भी ऐसे ही संस्कार भरने लगे। वे भक्त प्रह्लाद और बालक ध्रुव की कहानियाँ सुनाया करते थे। ये सब सुन कर मेरे मन में भी उन जैसा बनने की लालसा उत्पन्न होने लगी। मेरा विचार चलता था कि जब ये दोनों इतनी कम उम्र में ऐसी प्रकाण्ड भक्ति कर सकते हैं तो मैं तो इनसे उम्र में बड़ा हूँ, मैं भी ऐसा ही करूँगा। इसी विचार से 9 वर्ष की उम्र में एक रात सबको छोड़ कर मैं घर से, बालक ध्रुव की तरह निकल पड़ा और अयोध्या की तरफ गया। वहाँ मैंने एक महात्मा जी से दीक्षा ले ली तथा उनके साथ ही रहने लगा। जैसी भक्ति वे करते थे उसी तरह मैं भी करने लगा परन्तु मन को शान्ति नहीं मिली। गुरुजी मन्दिर में रहते थे तथा उनके और भी चेले थे। गुरुजी तो ठीक से रहते थे परन्तु उनके चेले ईर्ष्या-द्वेष के कारण आपस में लड़ते-झगड़ते रहते थे। गुरुजी उनको समझाते थे परन्तु वे सुधर नहीं पाते थे। उनकी ये सब बातें मुझे अच्छी नहीं लगती थीं। मन में ऐसा आता था कि ये सब दूसरों को तो ज्ञान सुनाते हैं परन्तु खुद में ही धारणा नहीं है। इन्होंने संसार तो छोड़ दिया है परन्तु अपने पुराने संस्कार नहीं छोड़ पा रहे हैं। इसमें गुरुजी भी सहयोगी नहीं बन पा रहे हैं। अत: मैंने एक दिन वह आश्रम छोड़ दिया।

### हठयोग से भी शान्ति नहीं मिली

इसके बाद मैं घूमते-घूमते नेपाल के राष्ट्रगुरु योगी नरहरि नाथजी के पास पहुँचा और उनका भी चेला बन गया। गुरुजी ने कई प्रकार के हठयोग कर सिद्धियाँ प्राप्त कर रखी थीं। एक बार भण्डारे में घी समाप्त हो गया तो उन्होंने कहा कि जितना घी चाहिए उतना नदी से पानी भर लाओ। हमने वैसा ही किया। उन्होंने उस पानी को घी बना दिया। हमने उस पानी में पूड़ियाँ तलीं और सबको खिलाईं।



उनकी सिद्धियाँ देख कर सोचा कि मैं भी ऐसी सिद्धियाँ प्राप्त करूँ। मैं भी हठयोग करने लगा। मैंने 6 मास पानी में रह कर तथा भोजन न कर बिताया। मैं सिर्फ घास और पत्ते खाता था। चार साल तक यह सब करके भी मेरे मन को शान्ति नहीं मिल पाई। यह कर्म भी मुझे सही राह नहीं दिखा पा रहा था इसलिए मैंने इसे भी छोड़ दिया। इसके बाद मेरा लक्ष्य भारत के बड़े-बड़े तीर्थस्थानों का भ्रमण और दर्शन था। मैं बद्रीविशाल, केदारनाथ, रामेश्वरम्, सोमनाथ, वैष्णोदेवी, मुक्तिनाथ (नेपाल), पशुपतिनाथ, मथुरा-वृन्दावन आदि तीर्थस्थानों पर भी गया। फिर भी शान्ति प्राप्ति का मेरा लक्ष्य पूरा नहीं हुआ।

### प्यारे बाबा और मम्मा के दिव्य रूप का अनुभव

अब मेरा अगला पड़ाव जयपुर

था। जयपुर में मैंने गायत्री परिवार के एक बड़े गुरु से दीक्षा ले ली। उन्होंने गायत्री मन्त्र का अनुष्ठान करने की राय दी। उनसे मन्त्र लेकर मैं एक मन्दिर में चला गया। वहाँ मैंने साधना प्रारम्भ की। तब तक मेरा पहनावा साधुओं समान हो गया था। भगवे वस्त्र तथा लम्बे-लम्बे बाल थे। मेरी उम्र भी 17-18 साल की हो गई थी। साधना करते-करते मन्दिर में ही रहने लगा। एक रात मैं जब सोया हुआ था तो किसी ने मेरा दरवाजा खटखटाया। तीन-चार बार खट-खट की आवाज के बाद मैंने दरवाजा खोला तो सामने सफेद कुर्ता-धोती पहने एक वृद्ध सज्जन को देखा (ये ब्रह्मा बाबा थे पर उस समय मुझे बाबा अथवा मम्मा की कोई पहचान नहीं थी)। इसके बाद मैं तकिए के पास आकर बैठ गया। इतने में ही वृद्ध कमरे में आए, साथ ही श्वेत साड़ी पहने एक कुमारी बहन भी आई। मातेश्वरी जगदम्बा भी एक कोने में दिखाई पड़ी। वृद्ध बाबा, कमरे में चारों तरफ घूमने लगे जैसे कि कमरे का निरीक्षण कर रहे हों। कुछ देर बाद वे बोले कि कमरा साफ नहीं है, इसे साफ करो। उन्होंने मेरे पास आकर प्रश्न पूछा - "आप कौन हो?" मैं स्तब्ध बैठा देखता रहा। फिर वे बोले – "आप यह शरीर नहीं, एक आत्मा हो, परमात्मा की संतान हो, ज्योतिर्बिन्दु हो।" इतना कह कर वे पीछे हटते-हटते गायब हो गये और साथ ही वो कुमारी तथा मातेश्वरी जी भी गायब हो गई। अगले पाँच-दस मिनट मैं इस बात पर विचार करता रहा कि यह सब क्या हुआ। वह बूढ़ा आदमी कौन था तथा उसके कहने का तात्पर्य क्या था। उसके बाद स्नान करके मैं ध्यान करने लगा। उस समय ऐसा लगा जैसे मैं इस शरीर से अलग होकर ऊपर की तरफ उड़ रहा हूँ। बड़ी ही हल्की स्थिति महसूस हुई। ऐसा मुझे पहले कभी नहीं हुआ था। ऊपर उठने के बाद वही बूढ़ा व्यक्ति मुझे ऊपर भी लाइट रूप में दिखाई दिया। फिर मुझे नीचे से अपने नाम की आवाज आने लगी। मैं कहने लगा कि मुझे पाप की दुनिया में नहीं जाना है जहाँ कि भ्रष्टाचार, पापाचार तथा अत्याचार की अति है। मैं क्या करूँगा ऐसी दुनिया में जाकर? कुछ समय बाद हल्कापन समाप्त हो गया तथा मैं शरीर के भान में आ गया। यह सब होने के बाद मेरा मन भक्ति, ध्यान, भजन से उपराम होने लगा। मन में यही प्रश्न उठता रहता था कि वह बूढ़ा व्यक्ति मुझे कहाँ मिलेगा? कहाँ जाकर उसे ढूँढूँ। मन न लगने के कारण मैं वहाँ से भी निकल गया।

### ईश्वरीय ज्ञान ने दी मन की सच्ची शान्ति

मैं फिर नेपाल पहुँचा। मन में नेपाल के पशुपतिनाथ मन्दिर के दर्शन करने की इच्छा थी। नेपालगंज में मेरे लौकिक फूफाजी रहते हैं जो ईश्वरीय ज्ञान में चलते हैं। उनके घर में ही दूसरे दिन गीता पाठशाला खुलने वाली थी। मैं उस रात वहीं रुका। कमरे में प्रदर्शनी के सारे चित्र रखे थे। ब्रह्मा बाबा तथा मातेश्वरी जी की तस्वीरें भी रखी थीं। मैं उन्हें देख कर हर्षित हो उठा। जिसकी मुझे तलाश थी वह मुझे यहाँ ऐसे मिल जायेगा आशा भी न थी। अगले दिन गीता पाठशाला का उद्घाटन करने के लिए एक ब्रह्माकुमारी बहन पहुँच गईं। उन्होंने मुझे आत्मा, परमात्मा, सर्व आत्माओं का एक पिता परमात्मा आदि सब ज्ञान सुनाया। सुन कर मेरे मन को बहुत शान्ति मिली। उस एक घण्टे में मुझे जितनी शान्ति का अनुभव हुआ उतना तो मुझे पिछले 10 वर्षों की भक्ति में भी नहीं हुआ था। ज्ञान सुनाने के बाद उन बहनजी ने भोग लगाया तथा उनकी जगह मुझे सरस्वती जी का रूप दिखाई दिया। दूसरे दिन से मैंने सात दिन का कोर्स करना प्रारम्भ किया। कोर्स करने के बाद मुझे निश्चय हो गया कि यह परमात्मा का ही ज्ञान है, इस विद्यालय

**को परमात्मा ही चला रहा है, यह परमात्मा का ही कार्य है, विनाश सामने खड़ा है, हमें पवित्र बन कर घर परमधाम चलना है तथा फिर दैवी राजधानी में आना है।**

यह ज्ञान लेकर मैं जयपुर लौट आया। वहाँ पर मैं उसी मन्दिर में रहने लगा। साथ-साथ ब्रह्माकुमारी आश्रम भी सुबह-शाम जाता था। मैंने अपने लम्बे बाल कटवा दिए तथा भगवे वस्त्र त्याग कर श्वेत वस्त्र धारण कर लिए। वह मन्दिर, कमेटी वालों का था। उन्होंने मेरा रहन-सहन, व्यवहार देख कर कहा कि या तो आप यहाँ ही रहो या फिर ब्रह्माकुमारी संस्थान में चले जाओ। मैंने सोचा कि जिस भगवान के लिए मैंने इतने वर्षों तक भक्ति की, जिसके लिए मैंने सारा संसार त्याग दिया वे अब मुझे मिले हैं, उनका सत्य ज्ञान मिला है तो यह मन्दिर छोड़ना क्या बड़ी बात है! मैंने मन्दिर छोड़ दिया। फिर मैं ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मुख्यालय में सेवार्थ आ गया। मैंने यहाँ दो मास सेवा की। **मैं इतने मन्दिरों, आश्रमों में रहा परन्तु यहाँ जैसी पवित्रता, स्वाच्छ वातावरण, शान्ति तथा स्नेह मुझे कहीं नहीं मिला। यहाँ के भाई व्यवहार में बिल्कुल हल्के हैं। सभी में स्नेह बहुत है। सभी विनम्रता से बातचीत करते हैं। ऐसा लगा मानो कि मैं किसी दूसरे संसार में आ गया हूँ।** मेरा मन यहीं रह जाने को करने लगा। दो मास सेवा के पश्चात् एक दिन मैंने उन्हीं बहनजी को देखा जिन्होंने मुझे कोर्स दिया था। वे एक पार्टी लेकर नेपाल से आई थीं। मेरी वेषभूषा तथा कटे बाल देख कर वे मुझे पहचान नहीं पाई। मैंने अपना परिचय उनको दिया। उन्होंने अपने सेवाकेन्द्र पर आने का निमंत्रण दिया। वहाँ सेवा के लिए भाई की ज़रूरत थी। जैसे कि परमात्मा ने मेरी बात सुन ली हो। मैं तो चाहता ही यही था कि ऐसे पवित्र वातावरण में रहूँ और इसी सेवा में जीवन को समर्पित करूँ। मैं उन बहनजी के साथ नेपाल चला गया और समर्पित जीवन की शुरूआत की।

मैं लौकिक घर से यह सोच कर निकला था कि जब तक भगवान मुझे नहीं मिल जायेंगे तब तक भले ही मेरा शरीर छूट जाए पर मैं घर वापिस नहीं आऊँगा। लगभग 13 वर्ष बाद मैं अपने लौकिक घर गया। वहाँ माता-पिता तथा घर के सभी सम्बन्धी आदि को शिव बाबा का परिचय दिया। उन्हें सात दिन का कोर्स करवाया। अब पिछले 10 वर्षों से मैं नेपालगंज सेवाकेन्द्र पर समर्पित रूप से सेवाएँ दे रहा हूँ। **इस ज्ञान-योग की धारणा से मेरा जीवन सफल हो गया है।** पहले मुझे क्रोध बहुत आता था। परन्तु प्यारे शिव बाबा ने समझाया है कि 'सभी आत्माओं का अपना-अपना पार्ट है तथा सदा सकारात्मक चिंतन करना है', इस ज्ञान-बिन्दु के आधार से मैंने अपने क्रोध पर नियन्त्रण कर लिया है। पहले के महात्मा जिनसे मैंने दीक्षा ली थी, वे चिलम आदि का सेवन करते थे। मुझे भी वे ऐसा करने को कहते थे। उनका अन्धविश्वास था कि भगवान शंकर जी भी तो भांग-चिलम आदि पीते थे, तो हम भी उसे पीएँ। परन्तु मेरे पूर्व जन्मों के अच्छे संस्कार मुझे ऐसा करने से रोक देते थे। उनको देख कर मन में विचार चलता था कि उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। **अब तो ईश्वरीय ज्ञान से मुझे जानकारी मिल गई है कि भगवान शिव, मानव आत्माओं के विकारों रूपी ज़हर को पीते हैं जिसको न समझने के कारण अन्धविश्वासी भगत भांग, चिलम आदि व्यसनों को पाल लेते हैं और आड़ प्यारे प्रभु के नाम की लेते हैं। परन्तु इस ज्ञान-योग के मार्ग पर मेरी चाहना से भी ज्यादा अर्थात् सम्पूर्ण सतोप्रधानता मुझे मिली है। मैं धन्य हूँ, मेरा जीवन सफल हो गया है। ऐसा लगता है कि यह सब मेरी भक्ति का ही फल है जो मुझे संगमयुग में भगवान मिले हैं।** ◆◆◆

# पुरुषोत्तम संगमयुग और अवतारवाद

– ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुम्बई)

इस सृष्टि की रचना के बारे में दो प्रबल विचारधारायें हैं। एक विचारधारा अर्थात् विज्ञान की विचाराधारा है कि पहले एक बहुत बड़ा अग्नि का गोला था, उसमें विस्फोट हुआ और उसी से सूर्यमाला बनी और इस सूर्यमाला से एक ग्रह अर्थात् पृथ्वी बनी। सभी ग्रह पहले तो बहुत गर्म थे परन्तु जैसे-जैसे ठण्डे होते गये तो उस कारण निर्मित हुई भाप उड़ गई परन्तु पृथ्वी पर गुरुत्वाकर्षण आदि के बल के कारण यहाँ की भाप पानी में परिवर्तन हो गई। इसी से पृथ्वी पर कई जगह महासागर वा सागर बन गये और उसी सागर में किटाणु पैदा हुए। उनकी समय-प्रति-समय उत्क्रान्ति हुई और फिर बंदर और फिर मानव का निर्माण हुआ। दूसरी विचारधारा है कि यह सृष्टि परमात्मा के दिव्य कर्त्तव्यों के आधार पर रची गई है। शुरू में श्रेष्ठ दुनिया थी और आहिस्ते-आहिस्ते आबादी बढ़ती गई। परिणामस्वरूप, जड़ता और तमोप्रधानता बढ़ी और इसे दूर करने के लिए समय-प्रति-समय परमात्मा का अवतार होता रहा। मानव समाज की सुरक्षा के लिए परमात्मा को विभिन्न रूप से सृष्टि पर अवतार धारण करना पड़ता है। अवतारवाद में भी दो प्रबल विचारधाराएँ हैं। एक विचारधारा के मुताबिक 10 अवतार हैं तो दूसरी विचारधारा के मुताबिक 24 अवतार हैं।

हम सबको मालूम है कि परमात्मा रचयिता है और सृष्टि अनादि रचना है। इस अनादि रचना में हम आत्माओं का कर्त्तव्य भी अजर-अमर है। विश्व परिवर्तन का कार्य एक ही अवतरण के समय होता है। इस समय को हमसंगमयुग कहते हैं। इसी युग में हम पुरुषोत्तम अथवा सर्वश्रेष्ठ बन सकते हैं। इसलिए इस संगमयुग को पुरुषोत्तम संगमयुग कहते हैं। परमात्मा के दिव्य अवतरण के समय जो विभिन्न कार्य होते हैं उन्हीं का गायन विभिन्न अवतारों के रूप में है। विभिन्न अवतारों में पहला अवतार मत्स्य अवतार है। उसका संबंध संगमयुग के साथ ही है। उसके मुताबिक जल प्रलय होने वाला था। एक नाव में इस सृष्टि की सभी जड़ी-बुटियाँ आदि लेकर नई सृष्टि की रचना हुई। यह भी संगमयुग की बात है क्योंकि अब परमात्मा नई सृष्टि की कलम लगा रहे हैं। वर्तमान सृष्टि की जो भी योग्य बातें हैं उनका बीज रूप में, नई सृष्टि की रचना और पालना के लिए प्रयोग होता है। मुझे याद है कि सन् 1983 में जब हम यूरोप की सेवा के लिए दो मास गए थे तब अव्यक्त बापदादा ने विदाई देते हुए यही कहा था कि आप यूरोप जाकर के वहाँ के वैज्ञानिकों की सेवा करो ताकि वे सभी वैज्ञानिक नई सृष्टि की पुन:स्थापना के लिए और बाद में पालना के समय आ करके हम बच्चों की सेवा में उपस्थित हो जाएँ। उसी प्रकार, परमात्मा हम बच्चों को बुद्धिजीवी और साधन सम्पन्न वर्ग (very important persons) की सेवा करने के लिए कहते हैं ताकि यह वर्ग सतयुग में आ करके हम बच्चों की सेवा में मददगार बने।

इस विश्व विद्यालय की स्थापना हैदराबाद स्थित एक साधारण 10'×10' के कमरे 'जशोदा भवन' में हुई। आज उसका विकास और विस्तार कितना व्यापक हो गया है। संत सम्मेलन में आने वाले संत महानुभावों का यही कहना था कि इतने कम समय में इतना व्यापक विस्तार किसी भी संस्था का नहीं हुआ है। अभी-अभी सुनामी तरंगों का जो विस्फोट हुआ उसके बारे में वैज्ञानिकों का कहना है कि इस विस्फोट में 100000 से अधिक एटम बमों के विस्फोट से उत्पन्न शक्ति जितनी शक्ति थी अर्थात् कुदरत के अंदर छिपी हुई प्रचण्ड स्थूल शक्ति के अनुभव के रूप में वाराह अवतार है। क्योंकि वाराह अवतार द्वारा पृथ्वी को समुद्र में डूबने से परमात्मा बचाते

हैं। प्रलयमयी सृष्टि पर फिर से नया जीवन प्रस्थापित करने का कर्त्तव्य परमात्मा करते हैं। कुर्म अर्थात् कछुए के रूप में अवतार भी सांकेतिक है कि हमें अपनी समेटने की शक्ति का उपयोग करना चाहिए। यह कुर्म अवतार समुद्र मंथन के साथ संलग्न है। इस मंथन से 14 रत्न निकले। हमें भी कछुए की तरह इन्द्रियों को समेटना है और ज्ञान सागर का मंथन करके गहन ज्ञान-रत्नों की खोज करना है। अमृत कलश भी इसी मंथन से निकला हुआ है। इसका भी अर्थ है कि अमृत समान श्रेष्ठ प्राप्तियाँ भी इसी विचार सागर मंथन से संगमयुग में होती हैं। श्री लक्ष्मी का भी समुद्र मंथन से प्रकट होना सिद्ध करता है कि ऐसे संगमयुग के श्रेष्ठ पुरुषार्थ के आधार पर हम श्री लक्ष्मी - श्री नारायण के समान बन सकते हैं। नृसिंह अवतार भी संस्कारों के पशुत्व को समाप्त कर श्रेष्ठ मानव का निर्माण करने का प्रतीक है। हिरण्यकश्यप जैसे भौतिकवादी तथा तमोप्रधान मनुष्यों के संताप से, प्रह्लाद जैसे सरल और साधु संस्कार के व्यक्ति की सुरक्षा करने के ईश्वरीय कर्त्तव्य का यह प्रतीक है। नृसिंह अवतार का स्तंभ से प्रकट होना यह दिखाता है कि जनता सामान्य रीति से जड़ होती है परन्तु उसके अंदर चेतनता भर कर और उससे जो क्रान्ति की ज्वाला प्रकट करके ही तमोप्रधानता का अंत होगा। गृह युद्ध (civil war) के द्वारा जो भविष्य में विश्व परिवर्तन के कार्य होने वाले हैं तथा जिनसे जन-जागृति और जन-शक्ति का निर्माण होने वाला है, उसका यह अवतार एक प्रतीक है। जैसे कुदरत में अगाध शक्ति है उसी प्रकार जन-शक्ति भी अगाध शक्ति है। इस शक्ति का अनुभव आगे चल करके हम सब करेंगे। वामन अवतार में, विराट परमात्मा के दिव्य कर्त्तव्य अर्थात् स्वर्ग-नर्क और पृथ्वी इन तीनों में परितर्वन का जो कार्य हुआ उसका गायन है। बली राजा को नर्क में भेज दिया अर्थात् तमोप्रधानता को खत्म कर दिया और पृथ्वी पर सुख-शान्ति का निर्माण हुआ। बली राजा ने समझा की यह छोटा-सा ब्राह्मण क्या माँगेगा। यही हकीकत है कि इस विश्व विद्यालय की शुरूआत में सिंध के नामीग्रामी व्यक्तियों ने भी यही सोचा था की इस संस्था को एक क्षण में हम नष्ट कर देंगे। यह मान्यता कितनी भ्रान्त थी। आज उन्हीं सिंधी समाज के बड़ों के द्वारा जब आदर-सत्कार मिलता है तो लगता है कि परमात्मा का दिव्य कर्त्तव्य कितना महान है।

परशुराम रूपी परमात्मा के अवतार का अर्थ है ब्राह्मण (ब्रह्मचर्य पालन करने वाले) शक्ति का निर्माण करना। यह बहुत बड़ी बात है। परमात्मा हम बच्चों को ब्रह्मा की संतान अर्थात् ब्राह्मण बनाते हैं अर्थात् ब्राह्मण संस्कृति का निर्माण करते हैं। परशुराम ने सृष्टि को नक्षत्रिय किया – यह भी एक संकेत हैं कि हम सबके अंदर क्षत्रिय रूपी योद्धा अर्थात् संघर्ष करने का संस्कार परमात्मा खत्म करते हैं और हमारे अंदर ब्राह्मणों का अर्थात् त्याग, तपस्या और सेवा का संस्कार निर्माण करते हैं। श्री राम और श्री कृष्ण के रूप में परमात्मा के अवतार के बारे में तो बहुत कुछ लिखा जायेगा लेकिन परमात्मा राम और कृष्ण के रूप में अवतार धारण नहीं करते हैं किन्तु हम आत्माओं को कृष्ण अथवा राम समान श्रेष्ठ बनाते हैं अर्थात् हमारे से ही सतयुगी और त्रेतायुगी समाज की कलम लगाते हैं। द्वापरयुग और कलियुग की नीतिवर्धक कथाओं के मुख्य पात्र श्री राम एवं श्री कृष्ण हैं। इसी आधार पर महाभारत, रामायण, भागवत आदि ग्रंथों का निर्माण हुआ। श्री कृष्ण और श्री राम हमें प्रेरणा देते हैं कि हम श्रेष्ठ चरित्रवान देवी-देवतायें बन सकते हैं। इसलिए उन्हों का गायन है और आज भी मानव समाज उनकी भक्ति करता रहता है। इस संगमयुग में ही दैवी संस्कृति का निर्माण परमात्मा करते हैं।

बुद्ध के रूप में परमात्मा का अवतार भी अहिंसा का गायन है। परमात्मा शान्ति स्वधर्म और अहिंसा परमोधर्म इन दोनों धर्मों की स्थापना संगमयुग में करते हैं। इसका प्रतीक

बुद्ध अवतार है। अहिंसा अर्थात् पवित्रता को हम सब इसी संगमयुग में धारण करते हैं। बुद्ध के रूप में परमात्मा का कर्त्तव्य एक प्रतीक है कि कैसे परमात्मा द्वारा स्थापित ज्ञान, श्रेष्ठ धर्म के रूप में चारों ओर फैल गया अर्थात् भारत से अन्य देशों में भी इसी ईश्वरीय ज्ञान और योग की कलम लगाई गई। कलकी अवतार तो है ही विश्व परिवर्तन का सूचक। इसी अवतार के द्वारा विनाश की प्रचण्ड ज्वाला होगी और बाद में नई सृष्टि का निर्माण होगा। कलकी अवतार अर्थात् कल की अर्थात् भविष्य की सतयुगी सृष्टि के निर्माण के लिए परमात्मा का अवतार। कलकी अवतार का संबंध संगमयुग से है क्योंकि यहाँ ही पुरानी सृष्टि नई सृष्टि में परिवर्तित होती है। संगमयुग श्रेष्ठ, महान है क्योंकि परमात्मा के एक ही दिव्य अवतरण के साथ विभिन्न कर्त्तव्यों का दस अवतारों के रूप में गायन और पूजन है। इसलिए दस अवतारों को समझने से परमात्मा के दिव्य अवतार तथा चरित्र की वास्तविक समझ हम सबको मिल सकती है। तब ही हम समझ सकते हैं कि सभी युगों में श्रेष्ठ युग है पुरुषोत्तम संगमयुग क्योंकि इसी युग में परमात्मा का दिव्य अवतरण होता है। यही सिद्ध करने के लिए यह लेख लिखा है। ⏭

## गृहस्थ में ब्रह्मचर्य........पृष्ठ 11 का शेष

का परिणाम है और शायद यही एक बीमारी है जिसके समाधान के लिए पहली बार नैतिकता, मर्यादा और आत्म-अनुशासन का पाठ पढ़ाया जाने लगा है जिस पाठ को प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय पिछले 68 वर्षों से पढ़ाता आ रहा है। जिन महानुभावों को इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की गृहस्थ में ब्रह्मचर्य की बात अटपटी लगती थी उन्हें भी यह बात अब धीरे-धीरे समझ आती जा रही है। इस जानलेवा बीमारी के इलाज के लिए 'एक नारी सदा ब्रह्मचारी' वाली मान्यता तो स्वीकार की जा चुकी है।

### नैतिकता और अनैतिकता की पराकाष्ठा

गिरती सृष्टि को सहारा देने अर्थ राजा भर्तृहरि, गौतम बुद्ध आदि ने पवित्रता का कंगन बाँध कर पत्नी को 'माई' कहा। उस समय समाज में अपवित्रता इतनी नहीं आई थी इसलिए इतना त्याग ही पर्याप्त था पर आज जबकि इतना दुराचार फैल गया है कि बहन-भाई की भी कुदृष्टि हो गई है तो ऐसी विकराल स्थिति को सुधारने के लिए एक नहीं बल्कि लाखों गौतम बुद्ध चाहिएँ। **आज जरूरत इस बात की है कि लोग यह बीड़ा उठायें कि हम न केवल विश्व की हर स्त्री को अपनी माँ-बहन समझेंगे पर अपनी स्त्री को भी लक्ष्मी रूप मानते हुए गृहस्थ में ब्रह्मचर्य का पालन करेंगे। क्योंकि काँटा जितना गहराई तक चुभा होता है, सूई को भी उतना ही गहराई तक जाना पड़ता है। इसलिए आश्चर्य नहीं आना चाहिए कि ईश्वरीय विश्व विद्यालय की 'गृहस्थ में ब्रह्मचर्य' की यह नई रस्म, नई बातें कहाँ से आईं! परिस्थितियाँ ही हर युग में नई राहों को जन्म देती आई हैं।**

**आज मानवीय समाज के पाँव में 'भाई-बहन के बीच भी अनैतिकता' का काँटा चुभ चुका है। यदि इस अनैतिकता रूपी काँटे को निकालने के लिए, ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में आने वाले भाई-बहनें गृहस्थ-धर्म में रहते हुए भी पवित्र रह कर, सूई का काम करते हैं तो इसमें हायतौबा मचाने की क्या आवश्यकता है? भाई-बहन का कामाधीन होना नैतिक पतन की पराकाष्ठा है और पति-पत्नी का एक साथ रह कर भी स्वेच्छा से ब्रह्मचर्य पालन, नैतिकता की पराकाष्ठा है। जब अनैतिकता पराकाष्ठा पर पहुँच रही है तो नैतिकता पर रोक क्यों? जो महावीर बन ऐसा बीड़ा उठाएँ वे आदर और सराहना के पात्र हैं।** ❑

# सुनामी अथवा कुनामी

– ब्रह्माकुमार पीयूष, दिल्ली

विगत में ही एशियाई देशों में आया समुद्री लहरों का कहर आजकल हरेक मनुष्य की जुबान पर है। प्रकृति ऐसी कुपित हुई कि पलक झपकते ही लाखों की संख्या में लोग काल के गाल में समा गए। कुछ समय पहले तक जिस समुद्र तट पर लोग मनोरंजन करने जाते थे तथा जहाँ बच्चे खेल-पाल करते रहते थे, आज उसी तट को देख कर लोगों के मन में भय और मृत्यु का एक अजीब-सा मंजर जागृत हो जाता है।

सुनामी, जिसे हिंदी में वास्तव में कुनामी की संज्ञा दी जानी चाहिए, के दौरान एक आश्चर्यजनक किन्तु सत्य घटना यह भी हुई कि प्रकृति के इस खौफनाक कृत्य ने जहाँ लाखों मनुष्यों को कभी न खुल सकने वाली नींद में सुला दिया वहीं कुछेक पूजा-स्थलों को कोई नुकसान नहीं पहुँचा। यह कहर जंगली जानवरों को भी कोई हानि नहीं पहुँचा सका। श्रीलंका के याला राष्ट्रीय पार्क के हाथियों, हिरणों, भालुओं, बंदरों, चीतों और कुत्तों को किसी प्रकार की कोई क्षति नहीं हुई। इसी प्रकार, पोर्ट ब्लेयर के निकट के जंगलों में भी समुद्री लहरों के आने से पूर्व ही जानवर सुरक्षित स्थानों पर चले गये थे।

इस घटना से यह सिद्ध होता है कि प्रकृति के करीब रहने के कारण जानवर, प्राकृतिक आपदा को पहले ही जान गये जबकि मानव के समस्त वैज्ञानिक साधन धरे-के-धरे रह गये तथा धन-जन की अपार हानि हुई। हमारा अभिप्राय यहाँ वैज्ञानिक अनुसंधानों को चुनौति देना नहीं है अपितु यह कहना भर है कि यदि ये प्रकृति के साथ तालमेल बिठा कर और आध्यात्मिकता को साथ लेकर किए जाएँ तो मानव जाति नई बुलंदियों तक जा सकती है।

सुनामी के कहर ने आधुनिक मानव को यह भी सोचने के लिए बाध्य किया है कि जो प्रकृति मनुष्य की सुख-सुविधाओं के लिए सेवक का कार्य करती थी वही आज मानव के अस्तित्व को समाप्त करने की कार्यवाही क्यों कर रही है। अवश्य ही मानवीय सभ्यता के विकास की दौड़ में हमने प्रकृति का ऐसा दोहन किया है कि आज वह मानव-रक्षक का रूप छोड़ कर भक्षक की भूमिका में उतर आई है। प्रकृति तो जड़ वस्तु है तथा उसमें आया बदलाव वास्तव में मानव की लोलुपता और स्वार्थ को ही अधिक दर्शाता है। आज का मनुष्य प्रकृति के प्रति क्रूर से क्रूरतम होता जा रहा है। जंगलों का अधिक-से-अधिक कटाव, कंक्रीट के जंगलों (शहरों) का अव्यवस्थित विकास तथा अनेक प्रकार के रासायनिक व परमाणु अस्त्रों का निर्माण वास्तव में विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं के आने का प्रमुख कारण बन रहा है।

मनुष्य के विध्वंसक और नकारात्मक विचार भी प्रकृति को अवश्य ही प्रभावित करते हैं। अत: यदि हम चाहते हैं कि प्रकृति का वही सुन्दर और मनोहारी रूप अनवरत रहे तो इसके लिए हमें प्रकृति के साथ शत्रुता का व्यवहार छोड़ कर मित्रवत् व्यवहार करना होगा। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि पृथ्वी ग्रह पर मानव का अस्तित्व प्राकृतिक सन्तुलन के कारण ही है। जिस क्षण यह सामंजस्य बिगड़ेगा उसी पल मानव जीवन खतरे में पड़ जायेगा।

सुनामी की घटना से एक बात और ध्यातव्य है कि कई स्थानों पर पूजा-स्थल सुरक्षित बच गये, मंदिरों आदि को अपेक्षाकृत कम हानि हुई जबकि पास ही स्थित अन्य भवन बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गये। इससे सिद्ध होता है कि जहाँ प्रभु स्मरण होता है, जहाँ सकारात्मकता और पवित्रता होती है उस स्थान की रक्षा करने के लिए भगवान भी बाध्य होता है। दूसरा, जंगली-जंतुओं का सुरक्षित बच जाना हमें यह सिखाता है कि चाहे हम कितने ही सभ्य क्यों न हो जायें, हमें अपना रिश्ता प्रकृति के साथ बना कर रखना चाहिए तभी तो प्राकृतिक घटनाओं का हम पूर्वानुमान लगा पायेंगे तथा अपने प्राणों की रक्षा कर सकेंगे। प्रकृति के निकट आना अर्थात् अपने वास्तविक (आत्मिक) स्वरूप में आना अर्थात् प्रभु के नजदीक आना। जैसे बच्चे जब माता-पिता की छत्रछाया में होते हैं तो सुरक्षित होते हैं लेकिन जैसे ही अपने अभिभावकों से दूर जाते हैं तो उनकी सुरक्षा खतरे में पड़ जाती है। इसी प्रकार, हम भी आत्मिक रूप में परमात्मा की संतान हैं। यदि हम ईश्वर की स्मृति में रहेंगे तो हमारी हर प्रकार से रक्षा होगी, प्रकृति भी हमारी दासी बन कर रहेगी। ❑

## शिवरात्रि ही हीरे-तुल्य जयंती है....पृष्ठ 01 का शेष

### शिव के नामों से शिव का परिचय

शिव, जिनके जन्म के उपलक्ष्य में शिवरात्रि मनाई जाती है, के सहस्त्रों नाम हैं जैसे कि अमरनाथ, सोमनाथ, विश्वेश्वर, पशुपतिनाथ, आशुतोष, त्र्यम्बकेश्वर आदि-आदि। स्पष्ट है कि ये नाम गुणवाचक, कर्त्तव्यवाचक या परिचय-वाचक हैं। ये सभी नाम ऐश्वर्य, शक्ति, उत्तमता और ऊँच कर्त्तव्यों को बताने वाले हैं। उदाहरण के तौर पर 'पशुपतिनाथ' नाम को लीजिए। यहाँ 'पशु' शब्द गाय तथा भैंस जैसे किसी पशु का वाचक नहीं है बल्कि 'आत्मा' शब्द का वाचक है। भारत तथा विदेशों में जो शैव मत के लोग हैं, उनके मत में आत्मा को 'पशु' कहा गया है क्योंकि 'पशु' का अर्थ है 'बँधा हुआ' और आत्मा चूँकि माया, कर्म-बंधन या प्रकृति के बंधन में है इसीलिए 'पशु' है। परमात्मा शिव बंधन से सदा-मुक्त हैं और आत्माओं रूपी पशुओं को माया रूपी पाश से मुक्त करने वाले हैं इसलिए 'पशुपतिनाथ', 'मुक्तेश्वर' आदि नामों से उनका गायन-पूजन है। इसीलिए ही उन्हें 'शिव' भी कहा गया है क्योंकि 'शिव' का अर्थ 'कल्याण' है और आत्मा का कल्याण या निस्तारा जिस द्वारा होता है, वही 'शिव' है। उन्हीं शिव को 'त्रिभुवनेश्वर' अथवा 'सर्वेश्वर' भी कहा गया है क्योंकि तीनों भुवनों या लोकों में रहने वाले सर्व जीव-प्राणियों, देवी-देवताओं या आत्माओं के एकमात्र ईश्वर या परम माननीय भी शिव ही हैं। अन्य सभी तो शरीरधारी हैं और 'रचना' हैं। शिव ही बिन्दु-रूप, अशरीरी, तेजोराशि और रचयिता अथवा परमपिता हैं। अन्य सभी उनके वश में हैं इसलिए उनका नाम 'शिव' है। हमें यह स्पष्ट रीति से मालूम होना चाहिए कि परमात्मा के ज्योतिस्वरूप का स्मरण-चिह्न शिवलिंग ही है, न कि शंकर की देवाकार मूर्ति। लिंग पुराण में कहा गया है कि परमात्मा शिव ही सृष्टि का महाविनाश कराते हैं और फिर नई सृष्टि की रचना कराते हैं, इसलिए ही इसे 'लिंग' कहा गया है।

### 'रात्रि' शब्द का भावार्थ और शिवरात्रि का महात्म्य

'शिवरात्रि' का त्योहार वास्तव में कोई दस-बारह घण्टे की रात्रि से सम्बन्धित नहीं है बल्कि अज्ञान-रात्रि से सम्बन्धित है। आप जानते हैं कि रात्रि को अन्धकार छाया होता है, लोग सो जाते हैं, वे काम-विकार के भी वशीभूत होते हैं, रात्रि को चोर-डाकू भी लूट-मार मचाते हैं और तमोगुण का वातावरण होता है। अत: इस भावार्थ को लेकर द्वापर युग और कलियुग को 'रात्रि' कहा गया है और सतयुग तथा त्रेतायुग को 'दिन'। कलियुग के अन्त में सभी नर-नारी अज्ञान-निद्रा में सोये होते हैं, वे काम-क्रोधादि विकारों के वशीभूत होते हैं और तमोप्रधान अवस्था वाले होते हैं। अत: उन्हें ईश्वरीय ज्ञान देकर उनका कल्याण करने के लिए, उन्हें पाप से मुक्त करने तथा सुखी बनाने के लिए परमपिता परमात्मा शिव कलियुग के अन्त में अवतरित होते हैं। कलियुग के अन्त के उन वर्षों को 'शिवरात्रि' कहा गया है क्योंकि उस अज्ञान-रात्रि में शिव सभी के कल्याण का कार्य करते हैं। उस महारात्रि की याद में ही आज तक लोग पुराने वर्ष के अन्त में अमावस्या से एक दिन पहले जो अंधेरी रात्रि पड़ती है, तब शिवरात्रि महोत्सव मनाते हैं।

### शिव कर्त्तव्य कैसे करते हैं?

शिव तो 'अजन्मा' और 'मृत्युञ्जय' माने गए हैं, वह तो देवों के भी देव अथवा 'सर्वेश्वर' हैं, अत: उनका जन्म किसी देवता या मनुष्य के पुत्र के रूप में नहीं होता। शिव तो कर्मातीत और सदा मुक्त हैं, इसलिए वह नस-नाड़ी के बन्धन में नहीं आते। वह तो महाकालेश्वर हैं इसलिए वह बाल, युवा, वृद्ध अथवा जन्म-मरण रूपी काल के वश में भी नहीं होते।

हाँ, संसार-भर के नर-नारियों को मुक्त करने के लिए, भक्तों को अपना परिचय देने के लिए, लोगों को पापों तथा दु:खों से छुटकारा दिलाने के लिए अर्थात् सतयुगी पावन तथा सुखी सृष्टि

रचने के लिए, वह कलियुग के अन्त में एक साधारण मनुष्य के तन में प्रवेश अथवा सन्निवेश करते हैं जिसका नाम वह 'प्रजापिता ब्रह्मा' रखते हैं। उनके मुख से ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा देकर वह मनुष्य को देवता बनाते हैं। इस प्रकार ही वह भारतवासियों का चारित्रिक नव-निर्माण करके सतयुगी दैवी सृष्टि की पुन: स्थापना करते हैं। शिव पुराण में भी लिखा है कि भगवान शिव ने कहा– "मैं ब्रह्मा जी के ललाट से प्रगट होऊँगा।" इस कथन के अनुसार समस्त संसार पर अनुग्रह करने के लिए शिव ब्रह्मा जी के ललाट से प्रगट हुए और उनका नाम रुद्र हुआ।" शिव पुराण में यह भी लिखा है कि "जब ब्रह्मा जी द्वारा सतयुगी सृष्टि रचने का कार्य तीव्र गति से नहीं हुआ और इस कारण वह निरुत्साहित थे, तब शिव ने ब्रह्मा जी की काया में प्रवेश किया, ब्रह्मा जी को पुनर्जीवित किया और उनके मुख द्वारा सृष्टि रची।" शिव पुराण में अनेक बार यह उल्लेख आया है कि भगवान शिव ने पहले प्रजापिता ब्रह्मा को रचा और फिर उन द्वारा सतयुगी सृष्टि को रचा। इस पौराणिक उल्लेख का भी यह भाव है कि परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के मस्तिष्क (ललाट) में अवतरित हुए और उसके मुख द्वारा ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा देकर उन्होंने संसार का कल्याण किया। महाभारत में लिखा है कि भगवान ने ब्रह्मा के तन में प्रविष्ट होकर ज्ञान दिया और सतयुग की पुन: स्थापना की।

**वर्तमान समय शिवरात्रि का समय है, अब विष को छोड़कर शिव से प्रीति जोड़ो!**

अब कलियुग का जो अन्तिम चरण चल रहा है, यह सारा काल 'रात्रि' अथवा 'महारात्रि' ही है। हम सभी नर-नारियों को यह शुभ संदेश देना चाहते हैं कि अब परमपिता परमात्मा शिव संसार को पावन तथा सुखी बनाने के लिए फिर से प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर ज्ञानामृत पिला रहे हैं और वास्तविक सहज राजयोग भी सिखा रहे हैं। अब कलियुगी सृष्टि के विनाश में बाकी थोड़ा समय बचा है। अत: अब हम सब का कर्त्तव्य है कि उनकी आज्ञानुसार हम नैष्ठिक ब्रह्मचर्य का पालन करें और शिव के अर्पण होकर संसार की ज्ञान-सेवा करें। वास्तव में यही सच्चा पाशुपत व्रत है जिसका फल मुक्ति और जीवनमुक्ति की प्राप्ति माना गया है। अब मनुष्य को चाहिए कि विकारों रूपी विष से नाता तोड़कर परमपिता परमात्मा शिव से अपना नाता जोड़े। वास्तव में शिवरात्रि केवल एक दिन नहीं होती बल्कि जब तक शिव परमात्मा इस अज्ञान-रात्रि में अपना कर्त्तव्य कर रहे हैं, यह सारा समय ही शिवरात्रि है जिसमें कि मनुष्यात्मा को ज्ञान द्वारा ही जागरण मनाना चाहिए, शिव परमात्मा की स्मृति में स्थित होना चाहिए तथा ब्रह्मचर्य व्रत का सहर्ष पालन करना चाहिए। शिवरात्रि का त्योहार मनाने की यही सच्ची रीति है।

**शिवरात्रि ही हीरे-तुल्य जयंती है**

चूंकि शिव ही ज्ञान के सागर, शान्ति के सागर, आनन्द के सागर, प्रेम के सागर, परमपिता परमात्मा हैं, जोकि कलियुग के अन्त में पशु-तुल्य आत्माओं को माया के पाशों से छुड़ाकर मुक्त करते हैं तथा ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग द्वारा मनुष्य को देवता बनाते तथा सतयुगी पावन सृष्टि की पुन: स्थापना कराते है, इसलिए 'शिव जयंती' ही सर्वोत्तम त्योहार है। यह सभी आत्माओं के परमपिता का जन्मोत्सव है जिसे सभी देशों में धूमधाम से मनाया जाना चाहिए। चूंकि शिव ही कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के संगम समय सभी मनुष्यों का जीवन कौड़ी-तुल्य से बदल कर हीरे-तुल्य बनाते हैं इसलिए शिवरात्रि ही हीरे-तुल्य जयंती है।




**1. ओ.आर.सी. (देहली)**- ग्राम विकास प्रभाग के कार्यक्रम में मंच पर विराजमान हैं ब्र.कु. दादी रुक्मणि जी, जिला पंचायत विकास अधिकारी भ्राता समशेर सिंह, बैंक के उप-महाप्रबन्धक भ्राता हेमन्त सिबलानिया जी तथा ब्र.कु. आशा बहन सम्बोधित करते हुए। **2. हरिद्वार**- श्री रामानन्दाचार्य जयन्ती पर महन्त हठयोगी श्री 108 महामण्डलेश्वर महन्त दर्शन सिंह जी, महन्त रामेश्वर दास जी, महन्त राजेन्द्र दास जी, महन्त ललितानन्द जी, महन्त सुन्दर दास जी, महन्त जगदीशानन्द जी का स्वागत करने के बाद ब्र.कु. मीना बहन तथा डॉ. भ्राता रामानन्द जी उनके साथ। **3. मोहाली**- विश्व शान्ति दिवस समारोह में सम्बोधित करती हुई पंजाब की पूर्व मन्त्री बीबी सतवन्त कौर सन्धु। साथ में हैं ब्र.कु. प्रेम बहन, ब्र.कु. रमा बहन तथा ब्र.कु. रजिन्द्र भाई। **4. पठानकोट**- सुनामी पीड़ितों की सहायतार्थ आयोजित कार्यक्रम में 5100/- रुपये का चैक प्रधानमन्त्री राहत कोष के लिए एस.डी.एम. भ्राता अमरजीतपाल जी को भेंट करती हुई ब्र.कु. सत्या बहन। साथ में हैं पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी भ्राता विशनदास शर्मा तथा अन्य। **5. देहली (हरि नगर)**- पॉवर लिफ्टिंग एसोसिएशन के अध्यक्ष भ्राता भूपिन्द्र धवन को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. शुक्ला बहन। **6. सारनाथ (वाराणसी)**- 'तनाव मुक्त प्रशासन' विषयक कार्यक्रम के उद्घाटन के बाद ब्र.कु. रोहित भाई, पुलिस महानिरीक्षक भ्राता देवराज नागर जी, ब्र.कु. सुरेन्द्र बहन तथा ब्र.कु. हरीश भाई ईश्वरीय स्मृति में। **7. मुजफ्फर नगर (अन्सारी रोड)**- एडवोकेट सैय्यद हशीन हैदर जैदी एवं करिश्मा बहन को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. पुष्पा बहन। **8. जालन्धर**- 'विश्व में अशान्ति एवं नैतिक मूल्यों के पतन के कारण तथा निवारण' विषयक विचार गोष्ठी में मंच पर विराजमान हैं ब्र.कु. राज बहन तथा अन्य। विद्वान पण्डित भ्राता नारायण शास्त्री जी विचार प्रस्तुत करते हुए।



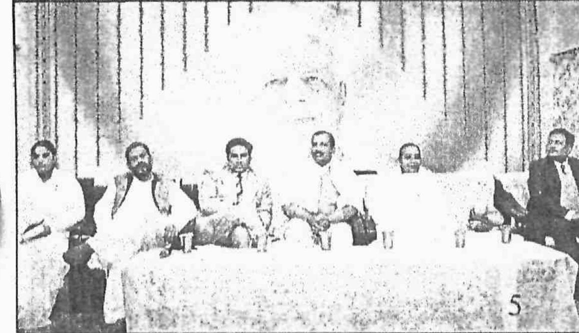






















1. **देहरादून**- उत्तरांचल योजना आयोग के उपाध्यक्ष भ्राता विजय बहुगुणा को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. प्रेमलता बहन। 2. **नई देहली (सरिता विहार)**- नए राजयोग केन्द्र का उद्घाटन करते हुए भ्राता ज्योति कुमार, एन.आई.आई.टी. के उपाध्यक्ष, व्यापार विकास की अध्यक्षा बहन शालिनी, ब्र.कु. आशा बहन, ब्र.कु. लक्ष्मण भाई तथा अन्य। 3. **बल्लबगढ़**- खेल पत्रकार संघ के खेल दिवस कार्यक्रम में ईश्वरीय सन्देश देने के बाद ब्र.कु. ज्योति भाई, अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी भ्राता विजय यादव, अन्तर्राष्ट्रीय कोच भ्राता सरकार तलवाड, अर्जुन अवॉर्ड प्राप्त भ्राता भीमसिंह तथा अन्य के साथ। 4. **आदमपुर मण्डी (हिसार)**- वार्षिकोत्सव का उद्घाटन करती हुई मुख्य प्रधानाचार्या बहन बिमला मिगलानी, ब्र.कु. रमेश बहन, ब्र.कु. सावित्री बहन तथा अन्य। 5. **अम्बाला कैंट**- विश्व शान्ति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मंच पर विराजमान हैं हरियाणा बी.एस.एन.एल. के महाप्रबन्धक भ्राता जे.बी. गुप्ता, ब्र.कु. कृष्णा बहन, ब्र.कु. चन्द्रशेखर भाई, एस.डी.एम. भ्राता सतबीर सैनी, विधायक भ्राता अनिल विज तथा ब्र.कु. नीति बहन। 6. **पानीपत (तहसील कैम्प)**- सरकारी विद्यालय में राजयोग शिविर के पश्चात् प्राचार्य, स्टाफ, ब्र.कु. बिन्दु बहन तथा ब्र.कु. चन्द्रकला बहन समूह चित्र में। 7. **पटियाला**- समाज कल्याण सोसायटी तथा ब्रह्माकुमारी केन्द्र के संयुक्त कार्यक्रम में सम्बोधित करती हुई ब्र.कु. कमला बहन। साथ में हैं विजय कुमार प्रधान, कमीश्नर भ्राता दयाशंकर तथा समाज सेवी भ्राता मोहनलाल गुप्ता। 8. **जगाधरी**- ज्ञान-चर्चा के बाद न्यायाधीशगण के साथ ब्र.कु. कृष्णा बहन।




**1. नया-नंगल (शिवालिक एवेन्यू)**- आध्यात्मिक स्नेह-मिलन कार्यक्रम में मंच पर विराजमान हैं नगर पालिका अध्यक्ष भ्राता आर.एस. सैनी, क्रीमिका फुड्स के मुख्य प्रबन्धक भ्राता ओमवीर, ब्र.कु. आशा बहन तथा ब्र.कु. पुष्पा बहन। **2. सुनाम**- कृभको सम्मेलन में सम्बोधित करती हुई ब्र.कु. मीरा बहन। प्रबन्धक भूपिन्द्र सिंह तथा अन्य भी मंच पर विराजमान हैं। **3. रामपुर मनिहारन**- ब्रह्माकुमारी पाठशाला के स्थापना दिवस पर सम्बोधित करती हुई ब्र.कु. सन्तोष बहन। साथ में हैं कर्नल भ्राता जी.एन. भटनागर तथा अन्य। **4. गुरुसहायगंज**- भूकम्प मृतकों को शान्ति-दान तथा 84 ट्राई साइकिल वितरण शिविर में उपस्थिति हैं ब्र.कु. नीलम बहन, बहन ऊषा दुबे, भ्राता डी.आर.के. भटनागर तथा बहन सरोजनी देवी आर्य। **5. फतेहगढ़**- स्मृति-दिवस समारोह में सम्बोधित करती हुई ब्र.कु. सुमन बहन। साथ में हैं सेवानिवृत्त सैनिक बोर्ड के सचिव ब्रिगेडियर भ्राता पी.एस. सिसोदिया तथा जिला कांग्रेस अध्यक्ष भ्राता राजेद्र सिंह कटियार। **6. हाथरस**- विश्व शान्ति दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य डॉ. भ्राता अशोक शर्मा। साथ में हैं ब्र.कु. सीता बहन, ब्र.कु. श्याम पचौरी भाई तथा प्रसिद्ध कवि डॉ. भ्राता वीरेन्द्र तरुण। **7. देहली (नरेला-शिवाजी नगर)**- प्रधानाचार्या बहन विमला को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. मधु बहन व ब्र.कु. बाला बहन। **8. मोहम्मदाबाद**- स्मृति दिवस कार्यक्रम में उपस्थित हैं ब्र.कु. सुमन बहन, जिला कांग्रेस अध्यक्ष भ्राता राजेन्द्र नाथ कटियार, आकाशवाणी के संवाददाता भ्राता प्रमोद कुदेशिया तथा अन्य।




**1. अबोहर**- पत्रकार संघ की ओर से भ्राता राज सदोष की अध्यक्षता में भ्राता राजू नागपाल, भ्राता रमेश कथूरिया, भ्राता राजेश सचदेवा, भ्राता आर.एल. गोयल, भ्राता श्यामसुन्दर सचदेवा, प्रदीप शर्मा, नरेश खन्ना तथा राज नरूला राजयोगिनी दादी मनोहर इन्द्रा को सम्मानित करने के बाद उनके साथ समूह चित्र में। **2. अम्बाला सिटी**- सुनामी पीड़ित आत्माओं को श्रद्धांजलि तथा शान्ति दान कार्यक्रम में मंच पर विराजमान हैं सनातन धर्म सभा के प्रधान भ्राता वीरेन्द्र सिंगला जी, ब्र.कु. सरोज बहन, ब्र.कु. सुनीता बहन तथा ब्र.कु. डॉ. रजिन्द्र भाई। **3. गाजियाबाद (लोहिया नगर)**- विधायक भ्राता पंडित सुरेन्द्र कुमार जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. विमला बहन। **4. होशियारपुर**- डी.टी.ओ. भ्राता चन्द्र गैंद जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. राजकुमारी बहन। **5. फिरोजपुर कैंट**- सरपंच भ्राता हजिन्द्र सिंह अटवाल को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. ऊषा बहन। **6. बरवाला**- समाज सेवी डॉ. भ्राता सुन्दर चावला को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. इन्द्रा बहन। **7. बिलासपुर**- सांसद भ्राता सुरेश चन्देल को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. मोनिका बहन। **8. राजपुरा**- ब्लॉक कांग्रेस प्रधान भ्राता नरेन्द्र शास्त्री को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. कैलाश बहन। **9. हाथरस (आनन्दपुरी)**- आध्यात्मिक ज्ञान प्रतियोगिता के विजयी को पुरस्कार व प्रशस्ति-पत्र देते हुए अपर पुलिस अधीक्षक भ्राता जितेन्द्र शाही एवं ब्र.कु. शान्ता बहन। **10. देहली (लक्ष्मी नगर)**- अतिरिक्त एस.एच.ओ. भ्राता एस.डी. त्यागी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. पुष्पा बहन। **11. जालन्धर (ग्रीन पार्क)**- युवा महोत्सव में भाषण प्रतियोगिता के विजेताओं को सम्मानित करती हुई आकाशवाणी की सहायक स्टेशन निदेशिका बहन सुमन पाल तथा ब्र.कु. बहनें।

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रेस, शान्तिवन – 307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया । सह-सम्पादिका ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : shantivan@vsnl.com (Ph. No. (02974)- 228125, 228126 gyanamrit@vsnl.com






















1. भोपाल (साकेत नगर)- म.प्र. के मुख्यमन्त्री भ्राता बाबूलाल गौर जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. अन्जू बहन। 2. धारवाड़- कर्नाटक के उच्च शिक्षा मन्त्री भ्राता डी. मन्जूनाथ तथा महामहिम राज्यपाल भ्राता टी.एन. चतुर्वेदी जी, ब्र.कु. बसवराज राजऋषि को, 'आध्यात्मिक मूल्य तथा ब्र.कु.ई.वि.वि. को विशेष रूप से उद्धृत करते हुए मानवता में एकता' इस विषय पर शोधकार्य के लिए डॉक्टर ऑफ फिलासॉफी अवॉर्ड प्रदान करते हुए। 3. सतना- सेवाकेन्द्र के नए भवन का उद्घाटन करती हुई दादी रत्नमोहिनी जी, ब्र.कु. महेन्द्र भाई तथा ब्र.कु. शीला बहन। 4. धरमपुर- जिला आरोग्य मेले का उद्घाटन करते हुए आरोग्य मन्त्री भ्राता इन्द्रजीत सिंह जाडेजा, धारासभ्य दौलत भाई, ब्र.कु. रंजन तथा ब्र.कु. वीणा बहन। 5. खजराना- विश्व शान्ति आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए म.प्र. के लोक निर्माण मंत्री भ्राता कैलाश विजयवर्गीय, गणेश मन्दिर के पुजारी भ्राता धर्मेन्द्र जी, ब्र.कु. नगीना, ब्र.कु. मीरा बहन तथा अन्य। 6. मुम्बई (खार)- महाराष्ट्र के खाद्य आपूर्ति, औषधि तथा श्रम मन्त्री भ्राता बाबा सिद्दिकी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. मीरा बहन। 7. उज्जैन- म.प्र. के नगर प्रशासन राज्यमन्त्री भ्राता शिवनारायण जागीरदार का स्वागत करती हुई ब्र.कु. ऊषा बहन। 8. चिन्तामणि- आध्यात्मिक मेले के उद्घाटन के बाद समूह चित्र में हैं कर्नाटक के आर्टीकल्चर मन्त्री भ्राता अलान्पुर श्रीनिवास, विधायक भ्राता एम सी सुधाकर रेड्डी, विधायक भ्राता कृष्ण बैरगौड़। 9. इन्दौर (ओमशान्ति भवन)- 'स्वर्णिम भारत के निर्माण में मेरा योगदान' विषयक परिचर्चा का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. हेमा बहन, कैलाश बाहेती, अधिवक्ता भ्राता विनय झेलावत, म.प्र. के लोक निर्माण मन्त्री भ्राता कैलाश विजयवर्गीय, ब्र.कु. ओमप्रकाश भाई, पुलिस अधीक्षक भ्राता आदर्श कटियार, नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. भ्राता पी.एस. हार्डिया तथा अन्य। 10. बड़ौदा (मंगलवाड़ी)- कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के प्रो. भ्राता रमेश शाह जी मंच पर आध्यात्मिक अनुभव सुनाते हुए। साथ में हैं श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ दिल्ली के कुलपति तथा अखिल भारतीय विश्वविद्यालय संघ के अध्यक्ष प्रो. भ्राता वाचस्पति उपाध्याय जी तथा ब्र.कु. राज बहन।



Regd. No. 10563/65, Postal Regd. No. RJ/WR/25/12/2003-2005, Posted at Shantivan-307510 (Abu Road) on 5-7th of the month.

आबू रोड (शान्तिवन)- राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी से स्नेह मिलन के बाद भारतीय क्रिकेट कन्ट्रोल बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष भ्राता राजसिंह डुंगरपुर, दाँता महाराजा के भाई भ्राता अजय सिंह, बहन पूर्णिमा जी, ब्र.कु. भूपाल भाई, भ्राता राजेश जैन, ब्र.कु. मुन्नी बहन, ब्र.कु. जयन्ती बहन तथा ब्र.कु. विजय बहन उनके साथ समूह चित्र में।




गुड़गाँव (ओ.आर.सी.)- 'महिलाएँ तथा पारिवारिक मूल्य' विषय पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में ब्र.कु. आशा बहन, ब्र.कु. गीता बहन, ब्र.कु. सुधा बहन, ब्र.कु. बृजमोहन भाई, मास्को (रशिया) के इन्टरनेशनल एसोसिएशन ऑफ चैरिटेबल फाउन्डेशन 'मामा' के अध्यक्ष भ्राता रेज एन्टागुला, राजयोगिनी दादी जानकी, ब्र.कु. चक्रधारी बहन तथा अन्य स्वागत कार्यक्रम के बाद समूह चित्र में।



आबू रोड (शान्तिवन)- 'आध्यात्मिक विवेक द्वारा विश्व में शान्ति' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय महासम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, विश्व शान्ति संस्थान नागपुर के संस्थापक तथा कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. भ्राता विश्वनाथ डी. कराड, राजयोगिनी दादी जानकी जी, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, ब्र.कु. निर्वैर भाई, ब्र.कु. मृत्युञ्जय भाई तथा अन्य।



जालोर- नशामुक्ति आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए राजस्थान के गृहमन्त्री भ्राता गुलाबचन्द कटारिया। साथ में हैं ब्र.कु. रंजू बहन तथा ब्र.कु. रेखा बहन।